नवंबर-दिसंबर2024 | वर्ष : 08 | अंक : 08-09 (संयुक्तांक) | मूल्य :₹25/- मात्र

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

ठंड की मार रहिए तैयार

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

ADLN SUPERSTRUCTURE LLP
Jamshedpur

इस अंक में खास...

4 ठंड की मार रहिए तैयार

06 खास खबर
एक स्थायी भविष्य के लिए उत्साह से मनाएं पर्वत दिवस
संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाने के लिए इस दिन को नामित किया गया था। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, पहाड़ दुनिया के लगभग आधे जैव विविधता हॉटस्पॉट और सभी प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों के 30% की मेजबानी करते हैं।

13 विशेष
दो साल बाद भी प्रोजेक्ट चीता सफल नहीं तो क्यों?
देश में चीता प्रोजेक्ट को शुरू हुए दो साल हो गए हैं, लेकिन चीते अभी भी पिंजरों में बंद हैं। उन्हें शिकार दिया जाता है और जरूरत पड़ने पर खाना खिलाया जाता है। ये अभी जंगल में पूरी तरह से स्वतंत्र होकर नहीं घूम पा रहे हैं।

16 विशेष
जगुआर है तीसरी सबसे बड़ी बिल्ली
बाघों और शेरों के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी बिल्ली, जगुआर की लंबाई लगभग 2.5 मीटर तक हो सकती है।

20 बालमेला 2024
बालमेला 2024 में सैकड़ों बच्चों ने सीखे मानसिक-शारीरिक रुप से फिट रहने के गुर

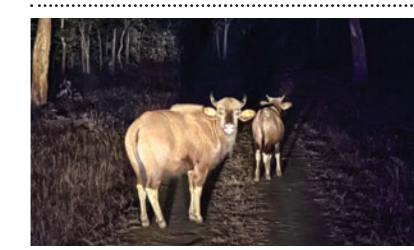

28 विशेष
श्रीलंका को चाहिए भारतीय बाइसन

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

वर्ष-8, अंक-8-9, नवंबर-दिसंबर-2024 (संयुक्तांक)
कुल पृष्ठ-36 (आवरण सहित)

मुख्य संरक्षक
सरयू राय

प्रधान संपादक
आनंद सिंह

संपादक
अंशुल शरण

संरक्षक मंडल
राजेन्द्र सिंह, एम.सी. मेहता, प्रो. आर. के. सिन्हा, प्रो. एस. इ. हसनैन, डॉ. आर. एन. शरण, डॉ. आर. के. सिंह

सलाहकार मंडल
डॉ. एम. के. जमुआर, डॉ. दिनेश कुमार मिश्र, डॉ. के. के. शर्मा, डॉ. गोपाल शर्मा, डॉ. ज्योति प्रकाश

डिजाइन आर्टिस्ट
अनवारूल हक

विधि परामर्शी
रवि शंकर (अधिवक्ता)

प्रबंधन
राजेश कुमार सिन्हा

संपादकीय कार्यालय
संपादकीय, सदस्यता एवं विज्ञापन
नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकुम, सिदरौल, रांची, झारखंड, पिन-834010

कोलकाता कार्यालय
ग्राउंड फ्लोर, 131/24, रीजेंट पार्क गवर्नमेंट क्वार्टर, कोलकाता, पिन-700040

पटना कार्यालय
201, दीपराज कॉम्प्लेक्स, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर, पटना 834004

स्वामी, मुद्रक और प्रकाशक **मधु** द्वारा झारखंड प्रिंटर्स प्रा. लि., 6A, गुरुनानक नगर, साकची, **जमशेदपुर** से मुद्रित व नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप पो. नामकुम, सिदरौल, **रांची**, झारखंड से प्रकाशित।
आरएनआई नंबर: JHAHIN/2016/68667
पोस्टल रजिस्ट्रेशन नंबर: RN/248/2016-18

ई-मेल: yugantarprakriti@gmail.com
मोबाइल 7307071539, 9304955301/2

■ अंशुल शरण

दिल्ली वालों के लिए प्रार्थना करें!

इस साल कड़ाके की ढंड पड़ने की उम्मीद है। मौसम विज्ञानी भी ऐसी ही भविष्यवाणी कर रहे हैं। बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में नवंबर की शुरुआत से ही जिस तरीके से ढंड बढ़ रही है, उससे यही अनुमान लगाया जा रहा है कि आने वाले दिनों में लोगों की जीवनशैली तेजी से बदलेगी। बढ़ती ठंड लोगों के लाइफस्टाइल को सबसे पहले बदलती है।

अति गर्मी हो या अति ठंड, दोनों इंसानों के लिए कहीं से भी फायदेमंद नहीं हैं। दरअसल, अति तो किसी भी चीज में हो, नुकसानदेह ही होता है। वैज्ञानिक मान रहे हैं कि पूरे देश में ठंड का प्रकोप अगर बढ़ रहा है या बढ़ने वाला है तो इसके पीछे अल-नीनो और अल-नीना की प्रमुख भूमिका है। अल-नीनो और अल-नीना एकाएक बारिश की मात्रा तेज कर देते हैं, ठंड बढ़ा देते हैं, गर्मी भी बढ़ा देते हैं। ये सब संकट यहीं से उत्पन्न हुआ है।

देश भर में नवंबर-दिसंबर का मौसम कई लोगों को सुहावना लग सकता है लेकिन दिल्ली वालों के लिए ये दमघोंटू होता है। अभी ही दिल्ली में मेडिकल इमरजेंसी जैसा माहौल हो गया है। पूरी दिल्ली गैस चेंबर बन गई है। पहले तो दीपावली के पटाखों ने वायु की गुणवत्ता को खराब किया। जो कोर-कसर बचा था, वह पराली के धुएं से पूर्ण हुआ। दिल्ली में वैसे ही प्रदूषण का आंकड़ा देश भर के प्रदूषण के आंकड़ों से सबसे ज्यादा खराब होता है। ऐसे में यह वास्तव में बेहद खराब तथ्य है कि दिल्ली वासी मेडिकल इमरजेंसी के माहौल में जीवन यापन कर रहे हैं। किसी भी इलाके में चले जाएं, धुंध का साम्राज्य आपको दिख ही जाएगा। इस कोहरे और धुंध के कारण दिल्ली के वायुमंडल की स्थिति खराब हो गई है। विमानों को टेक ऑफ और लैंड करने में दिक्कत हो रही है क्योंकि विजिबिलिटी बेहद कम है। ट्रेनों को आगमन-प्रस्थान में खासी दिक्कत हो रही है क्योंकि दृश्यता बेहद कम है। एक तो ठंड के कारण इस इलाके में कोहरा ज्यादा पड़ता ही है, उस पर धुंध। कुल मिला कर दिल्ली वालों की हालत बेहद खराब है।

आने वाले दिनों में कई पर्यावरणीय घटनाएं होनी हैं। विश्व पर्वत दिवस भी उनमें से एक है। हमने अपनी सुविधाओं के लिए पहाड़ों का जितना नुकसान किया है, वह अपने आप में एक तथ्य है। अब जरूरी है कि हम लोग पहाड़ों को बचाएं। पहाड़ नहीं बचेंगे तो मौसम की जो मार आप अभी खा रहे हैं, आपकी आने वाली पीढ़िया उससे ज्यादा खराब हालात का सामना करेगी। आप पहाड़ बना तो नहीं सकते क्योंकि ये प्रकृति की देन है लेकिन पहाड़ों के बारे में लोगों को जागरूक जरूर कर सकते हैं ताकि जो भी पहाड़ इस धरा पर बचे हैं, वो कम से कम बचे रहें।

ठंड शुरु हो गई है। अपना ख्याल जरूर रखें। अपने परिजनों, दोस्तों का भी ख्याल रखें। हां, जो बेजुबान प्राणी हैं, उनका अगर ख्याल रख सकें तो सोने पे सुहागा।

मिलते हैं फिर नये अंक में, एक नये विषय के साथ। तब तक आप इस नवंबर-दिसंबर माह के संयुक्तांक को पढ़ें और हमें अपना सुझाव भेजना ना भूलें।

टंकी में मछली पालन

रांची के युवाओं को मछली पालन की नई तकनीक 'बायो फ्लॉक' से मछली पालन का प्रशिक्षण दे रहे जिला मत्स्य पदाधिकारी अरूप कुमार चौधरी ने बताया कि घर के बैकयार्ड में भी इस तकनीक से मछली पालन किया जा सकता है।

झारखंड गठन के बाद मछली उत्पादन में राज्य ने खूब तरक्की की है। यहां के केज सिस्टम से मछली पालन की ख्याति पूरे देश में है। अब इससे आगे बढ़ कर सरकार और मत्स्य निदेशालय 'बायो फ्लॉक' तकनीक से मछली पालन को बढ़ावा दे रही है, ताकि कम जमीन और कम पानी भी मछली पालन में बाधक ना बन सके। आम भाषा में कहें तो टंकी में मछली पालन की यह तकनीक इसलिए भी खास है कि इसमें ना सिर्फ पानी कम लगता है। बल्कि मछलियों के अपशिष्ट पदार्थ को ही मशीन के माध्यम से फिर भोजन में तब्दील कर दिया जाता है। इसका लाभ यह होता है कि मछलियों के भोजन में कम राशि खर्च होती है।

घर के चहारदीवारी के अंदर भी हो सकता है मछली पालन

रांची के युवाओं को मछली पालन की नई तकनीक 'बायो फ्लॉक' से मछली पालन का प्रशिक्षण दे रहे जिला मत्स्य पदाधिकारी अरूप कुमार चौधरी ने बताया कि घर के बैकयार्ड में भी इस तकनीक से मछली पालन किया जा सकता है। इसका घनत्व काफी ज्यादा होता है। यानी कम जगह में अधिक मछली पालन से यह फायदे का सौदा हो जाता है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों के पास बहुत बड़ा जमीन का टुकड़ा नहीं है, जिन इलाकों में पानी की कमी है, वहां अपने घर के अहाते में भी इस तकनीक से 10 डिसमिल जमीन में सात टैंक लगाकर आराम से 2 टन मछली का उत्पादन किया जा सकता है। किसानों और पशुपालकों के लिए यह आय बढ़ाने का अतिरिक्त स्रोत हो सकता है।

जिला मत्स्य पदाधिकारी अरूप चौधरी ने बताया कि बायो फ्लॉक तकनीक से मछली पालन काफी फायदेमंद होता है। इसके लिए युवाओं और खासकर महिलाओं को आगे आना चाहिए। क्योंकि, इसे घर के आंगन, दालान, छत के ऊपर से भी शुरू किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत मिलेगी सब्सिडी

अरूप कुमार चौधरी के अनुसार, 10 डिसमिल जमीन पर बायो फ्लॉक के साथ यूनिट वाला एक स्ट्रक्चर बनाने में 07 लाख 50 हजार रुपये खर्च होते हैं। इसके लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत महिला, एससी और एसटी वर्ग से आने वाले लोगों को साढ़े चार लाख रुपए तक की सब्सिडी दी जाती है। वहीं अन्य लोगों के लिए साढ़े तीन लाख रुपये सब्सिडी का प्रावधान है।

चधरी के अनुसार, निदेशालय की ओर से इसके लिए निशुल्क प्रशिक्षण भी दिया जाता है। समय-समय पर मत्स्य पालकों को विशेषज्ञों की सलाह भी दी जाती है ताकि उनका कोई नुकसान ना हो।

योजना और सब्सिडी के लिए इनसे मिलें

जिला मत्स्य पदाधिकारी अरूप चौधरी ने बताया कि बायो फ्लॉक तकनीक से मछली पालन काफी फायदेमंद होता है। इसके लिए युवाओं और खासकर महिलाओं को आगे आना चाहिए। क्योंकि, इसे घर के आंगन, दालान, छत के ऊपर से भी शुरू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि पूरी योजना की जानकारी और सब्सिडी के लिए अपने प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी या प्रखंड मत्स्य पदाधिकारी से मिलें। अगर कोई परेशानी आए, तब डोरंडा स्थित जिला मत्स्य पदाधिकारी कार्यालय में आकर भी पूरी जानकारी और योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन जमा कर सकते हैं। ■

टूटेगा 25 साल का रिकॉर्ड!

ठंड की मार रहिए तैयार

इस साल कड़ाके की ठंड पड़ने के आसार हैं। यह पिछले 25 साल का रिकर्ड तोड़ सकती है। एएमयू (अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय) के भू-विज्ञानियों का कहना है कि उत्तरी भारत में ठंड बढ़ने का सीझा संबंध प्रशांत महासागर में चल रहे "ला-नीना" प्रभाव से है। यह जलवायु परिवर्तन उत्तरी भारत में तापमान को सामान्य से अधिक कम कर सकता है, जिससे इस बार ठंड बेहद तीव्र हो सकती है।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

एएमयू के भूगोल विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. सलेहा जमाल बताती हैः ला-नीना के कारण हमारे क्षेत्र में तापमान में गिरावट और उच्च दबाव वाली ठंडी हवाएं बढ़ेंगी, जो उत्तर भारत में ठंड का प्रकोप लाएंगी। यह एक जलवायु चक्र है, जो मौसम में अप्रत्याशित बदलाव लाता है। जैसे कि बारिश पहले कम हुई, लेकिन फिर काफी ज्यादा बारिश से बाढ़ की स्थिति बनी। यही अस्थिरता ठंड में भी देखने को मिल सकती है।

फसलों पर पड़ेगा ठंड का असर

प्रोफेसर जमाल ने बताया कि ला-नीना का सीधा असर रबी और खरीफ की फसलों पर भी दिखेगा। मार्च और अप्रैल में असामान्य ठंड और बारिश से किसानों को नुकसान हो सकता है। उन्होंने कहा कि प्रशांत महासागर की हवाएं भूमध्य रेखा के समानांतर पश्चिम की ओर बहती हैं, जो गर्म पानी को दक्षिण अमेरिका से एशिया की ओर ले जाती हैं। अल-नीनो और ला-नीना जैसे प्रभाव न केवल मौसम बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था और पर्यावरण पर भी असर डालते हैं।

जलवायु परिवर्तन का चक्र और भारत पर प्रभाव

डॉ. जमाल के अनुसार, अल-नीनो और ला-नीना के प्रभाव आमतौर पर 9 से 12 महीने तक रहते हैं, लेकिन इनके आने का कोई तय समय नहीं होता। ये चक्र हर 2 से 7 साल में आते हैं और इनका असर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जलवायु को प्रभावित करता है। विशेष रूप से भारत का मानसून प्रशांत महासागर की जलवायु पर निर्भर रहता है, जिससे जलवायु में कोई भी बदलाव भारत के मौसम पर सीधा प्रभाव डालता है।

क्यों पड़ेगी कड़ाके की ठंड?

अक्टूबर-नवंबर के दौरान ला नीना के एक्टिव होने की संभावना व्यक्त की गई है। मौसम विभाग के अनुसार, अक्टूबर-नवंबर में ला नीना की स्थिति बनने की 71% संभावना नजर आ रही है। हालांकि मौसम विभाग ने यह भी कहा है कि ठंड कितनी पड़ेगी इसका सटीक पूर्वानुमान नवंबर के आखिरी दिनों में ही लगाया जा सकेगा। ला-नीना के इसी महीने एक्टिव होने पर दिसंबर और जनवरी के महीने में कड़ाके की ठंड लोगों को सता सकती है। ला-नीना की वजह से आमतौर पर तापमान में गिरावट दर्ज की जाती है। सर्दियों में भी इसकी वजह से अधिक बारिश देखने को मिलती है।

किस इलाके में पड़ेगी इस साल ज्यादा ठंड

ला-नीना की बात करें तो इस दौरान पूर्वी हवाएं समुद्र के पानी को पश्चिम की ओर धकेलती हैं जिसकी वजह से समुद्र की सतह ठंडी हो जाती है। आईएमडी के अनुमान के अनुसार, ला-नीना नवंबर में एक्टिव हो चुका है। ■

घने कोहरे में दिल्ली-यूपी

दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में मौसम करवट बदल चुका है। उत्तर भारत में ठंड की शुरुआत हो चुकी है। दक्षिण भारत में बारिश का सिलसिला जारी है। मौसम विभाग के मुताबिक 18 नवंबर को दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और पंजाब समेत कई राज्यों में घना कोहरा छाया रहा। ट्रेनों की रफ्तार पर इस कोहरे का असर पड़ा है। मौसम विभाग के मुताबिक, राजधानी दिल्ली में ठंड बढ़ने वाली है। यहां पूरे नवंबर माह में घना कोहरा छाया रहेगा। दिन शुष्क रहने वाले हैं, हालांकि इस दौरान बारिश होने की कोई संभावना नहीं है और आसमान साफ रहेगा। दिल्ली में कोहरे के साथ ही प्रदूषण भी गंभीर स्थिति में बना हुआ है। ऐसे में स्मॉग भी हो सकता है।

उत्तर भारत में गिरेगा तापमान

मौसम विभाग के अनुसार अगले 15 दिनों में उत्तर भारत में न्यूनतम तापमान 5-8 डिग्री सेल्सियस तक गिरने वाला है। उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमालयी पश्चिम बंगाल समेत उत्तर-पश्चिम भारत में कोहरे की स्थिति रहने वाली है। असम-मेघालय में अगले लगातार घना कोहरा रहने की संभावना है। तमिलनाडु-केरल में बारिश की संभावना बरकरार है। यह दिसंबर तक हो सकती है।

इन राज्यों में पड़ेगा कोहरा

उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में कोहरे की चादर बिछी हुई है। पंजाब-हरियाणा और पश्चिमी राजस्थान समेत कई इलाकों में घना कोहरा जारी है। उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्रों में भी सुबह के समय घना कोहरा देखा जा रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश समेत भारत के उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों में न्यूनतम तापमान 2-3 डिग्री सेल्सियस गिरने की संभावना है। अब अगर यूपी की बात करें तो उत्तर प्रदेश में अब ठंड का मौसम दस्तक दे चुका है और अगले कुछ दिनों में कड़ाके की सर्दी पड़ने के आसार हैं। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, पछुआ हवाओं की सक्रियता और गिरते तापमान के कारण ठंड तेजी से बढ़ेगी। आईएमडी लखनऊ के वरिष्ठ वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने आने वाले दिनों में यूपी के मौसम को लेकर एक खास और अहम अनुमान जताया है। मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया है कि 20 नवंबर से यूपी के तापमान में भारी गिरावट होने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश में कोहरा और सर्द हवाओं का असर देखने को मिलेगा। मौसम वैज्ञानिक से बातचीत और मौसम विभाग के अपडेट्स के मुताबिक यूपी के मौजूदा और आने वाले दिनों के मौसम की कुछ ऐसी तस्वीर बन रही है। ■

11 दिसंबरः विश्व पर्वत दिवस पर खास

एक स्थायी भविष्य के लिए उत्साह से मनाएं पर्वत दिवस

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाने के लिए इस दिन को नामित किया गया था। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, पहाड़ दुनिया के लगभग आधे जैव विविधता हॉटस्पॉट और सभी प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों के 30% की मेजबानी करते हैं। मानवता का आधे से अधिक दैनिक जीवन पर्वतीय मीठे जल पर निर्भर करता है। विश्व के 80% भोजन की आपूर्ति 20 वनस्पति प्रजातियों से होती है और उनमें से 6 प्रजातियां, मक्का, आलू, जौ, ज्वार, टमाटर और सेब, पर्वतीय क्षेत्रों में उत्पन्न हुई हैं तथा उनमें विविधता भी आई है।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस हिमस्खलन के खतरों और सुरक्षा की ज़रूरतों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है। उनका संरक्षण सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक है और यह सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लक्ष्य 15 का हिस्सा है। जलवायु परिवर्तन और अत्यधिक दोहन के कारण पहाड़ खतरे में हैं। पहाड़ों का संरक्षण एक महत्वपूर्ण कारक है।

पहाड़ न केवल निवासियों के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि निचले इलाकों में रहने वाले लाखों लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। वे दुनिया की प्रमुख नदियों के स्रोत हैं और जल चक्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दिन पहाड़ों के अवसरों और विकास पर भी ध्यान केंद्रित करता है। यह लोगों को पर्यावरण में पहाड़ों की भूमिका और जीवन पर उनके प्रभाव को समझने के लिए शिक्षित भी करता है। इसे हर साल एक खास थीम के साथ मनाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस 2024 की थीम

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2002 को संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष घोषित किया और इस अवसर पर 2003 से 11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस के रूप में नामित किया। वर्ष 2024 की थीम हैः एक स्थायी भविष्य के लिए पर्वतीय समाधान-नवाचार, अनुकूलन और युवा।

इतिहास

अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस का इतिहास 1992 से शुरू होता है, जब पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में एजेंडा 21 ₹नाज़ुक पारिस्थितिकी तंत्र का प्रबंधनः सतत पर्वत विकास₹ अध्याय 13 को अपनाया गया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसने पर्वत विकास के इतिहास में एक मील का पत्थर स्थापित किया। पहाड़ों के महत्व की ओर बढ़ते ध्यान को देखते हुए, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2002 में संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष घोषित किया और 2003 से 11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस के रूप में नामित किया। इसलिए हम कह सकते हैं कि पहली बार अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस 11 दिसंबर 2003 को मनाया गया था। हर साल इसे एक खास थीम के साथ मनाया जाता है।

पहाड़ों में होने वाली बर्फ वसंत और ग्रीष्म ऋतु में पिघलने तक पहाड़ों में ही जमा रहती है और नीचे की ओर बस्तियों, कृषि और उद्योगों के लिए आवश्यक जल उपलब्ध कराती है। वास्तव में, अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में, लगभग 90% नदी का पानी पहाड़ों से आता है।

कैसे मनाते हैं अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस समारोह

इसे विभिन्न तरीकों से मनाया जाता रहा है। इस दिन विभिन्न मंच, व्यावहारिक गतिविधियाँ, प्रस्तुतियाँ, छात्र वाद-विवाद, फ़ोटो, कला प्रतियोगिताएँ, पदयात्राएँ और विशिष्ट समूहों को लक्षित कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आप अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस पर कार्यक्रम की अपनी योजना के बारे में info-IMD@fao.org पर भी लिख सकते हैं ताकि इसे अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस की वेबसाइट पर प्रकाशित किया जा सके। आप अपने दोस्तों, रिश्तेदारों आदि के साथ पर्वतीय जीवन के अपने अनुभव, अपने पसंदीदा पर्वत की तस्वीरें, पल आदि भी साझा कर सकते हैं।

पहाड़ों के बारे में रोचक तथ्य

पहाड़ प्रकृति की सबसे खूबसूरत संरचनाएं हैं। वे आसमान के सामने खड़े हैं और ऐसा लगता है कि वे पूरे ग्रामीण इलाके को अपनी छाया में ले सकते हैं। वे मनोरंजन और संसाधनों के स्रोत हैं। वे कृषि का स्रोत हैं और उत्पादन के लिए ढलानों पर पर्याप्त जगह प्रदान करते हैं।

जल चक्र में पर्वतों की अहम भूमिका

पहाड़ों में होने वाली बर्फ वसंत और ग्रीष्म ऋतु में पिघलने तक पहाड़ों में ही जमा रहती है और नीचे की ओर बस्तियों, कृषि और उद्योगों के लिए आवश्यक जल उपलब्ध कराती है। वास्तव में, अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में, लगभग 90% नदी का पानी पहाड़ों से आता है। समशीतोष्ण यूरोप में, आल्प्स, जो राइन नदी बेसिन के लगभग 11% क्षेत्र पर कब्जा करता है, वार्षिक प्रवाह का 31% और गर्मियों में 50% से अधिक की आपूर्ति करता है। पहाड़ों से आने वाला पानी जलविद्युत शक्ति का भी स्रोत है। विकासशील देशों में लकड़ी का ईंधन पर्वतीय बस्तियों में ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है तथा शहरी निचले इलाकों और मैदानी इलाकों में रहने वाले कई लोगों के लिए भी लकड़ी या लकड़ी का कोयला आवश्यक है। पहाड़ी लकड़ी का भी कई तरह से उपयोग किया जाता है। पहाड़ के पारिस्थितिकी तंत्र जैविक विविधता आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, जागरूकता बढ़ाने और न केवल हमारे जीवन के लिए बल्कि हमारे निवासियों, पारिस्थितिकी तंत्र और पर्यावरण के लिए भी पर्वतों के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने के लिए हर साल 11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया जाता है। ■

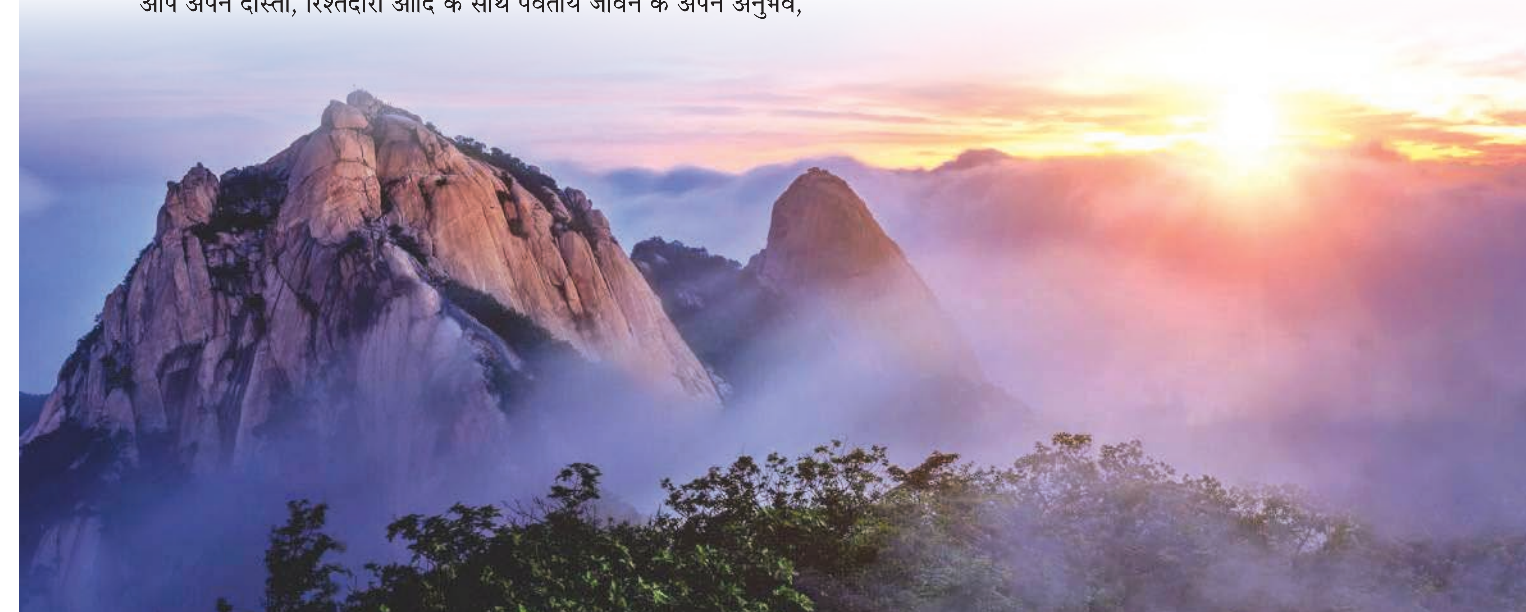

• मृदा परीक्षण •

खेत से मिट्टी का सही नमूना क्यों अहम है?

मिट्टी के रासायनिक परीक्षण के लिए पहली आवश्यक बात है खेतों से मिट्टी के सही नमूने लेना। न केवल अलग-अलग खेतों की मृदा की आपस में भिन्नता हो सकती है बल्कि एक खेत से अलग-अलग स्थानों की मृदा में भी भिन्नता हो सकती है। परिक्षण के लिए खेत से मृदा नमूना सही होना चाहिए। मृदा का गलत नमूना होने से परिणाम भी गलत मिलेंगे। खेत की उपजाऊ शक्ति की जानकारी के लिए ध्यान देने योग्य बात यह है कि परिक्षण के लिए मिट्टी का जो नमूना लिया गया है वह आपके खेत के हर हिस्से का प्रतिनिधित्व करता हो...

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

नमूना लेने के उद्देश्य

रासायनिक परिक्षण के लिए मिट्टी के नमूने एकत्रित करने के तीन मुख्य उद्देश्य हैं-

1. फसलों में रासायनिक खादों के प्रयोग की सही मात्रा निर्धारित करने के लिए
2. ऊसर तथा आम्लिक भूमि के सुधार तथा उसे उपजाऊ बनाने के सही ढंग जानने के लिए
3. बाग़ व पेड़ लगाने में भूमि कि योग्यता निश्चित करने के लिए

समान भूमि की निशानदेही

1. जो भाग देखने में मृदा कि किस्म, फसलों के आधार पर, जल निकास व फसलों कि उपज से भिन्न हो, उस प्रत्येक भाग कि निशानदेही लगाए प्रत्येक भाग को खेत मानें।
2. हर भाग(खेत) से मृदा परीक्षण के लिए सही नमुना चाहिए। नमूने के लिए खेत का क्षेत्रफल इलाके के अनुसार एक एकड़, उससे कम या अधिक हो सकता है।

नमूना लेने के औजार

मृदा का सफल नमूना लेने के लिए मृदा परिक्षण ट्यूब, वर्मा, कुदाली तथा खुरपी का प्रयोग किया जा सकता है। सबसे पहले मृदा के ऊपर का घास-फूस साफ करें। भूमि की सतह से हल कि गहराई (0-15 सेंटीमीटर) तक मृदा परिक्षण ट्यूब या बर्मा द्वारा मृदा की एक सार टुकड़ी लेवें। यदि आपको कुदाल या खुरपी का प्रयोग करना हो तो 'v' के आकार का 15 से.मी. गहरा गड्ढा बनाए। अतः एक ओर से ऊपर से नीचे तक 2-3 सेंटीमीटर मोटाई की मिट्टी की एक सार टुकड़ा काटें। एक खेत में 10-12 अलग-अलग स्थानों (बेतरकीब ठिकानों) से मृदा की टुकड़ियों लें और उन सबको एक भोगोने या साफ कपड़े में इकट्ठा करें। अगर खड़ी फसल से नमूना लेना हो, तो मृदा का नमूना पौधों कि कतारों के बीच वाली खाली जगह से लेवें। जब खेत में क्यारियां बना दी गई हो या कतारों में खाद डाल दी गई हो तो मृदा का नमूना लेने के लिए विशेष सावधानी रखें।

रसायनिक खाद की पट्टी वाली जगह से नमूना न लें। जिन स्थानों पर पुरानी बाड़, सड़क और जहां गोबर खाद का पहले ढेर लगाया गया हो या गोबर खाद डाली गई हो, वहाँ से मृदा का नमूना न लें। ऐसे भाग से भी नमूना न लें जो बाकी खेत से भिन्न हों। अगर ऐसा नमूना लेना हो, तो इसका नमूना अलग रखें।

मिट्टी को मिलाना और एक ठीक नमूना तैयार करना

एक खेत में भिन्न-भिन्न स्थानों से तसले या कपड़े में इक्कट्ठे किए हुए नमूने को छाया में रखकर सुखा लें। मृदा को धूप, आग या अंगीठी आदि के ऊपर रखकर न सुखाएं। एक खेत से एकत्रित की हुई मृदा को अच्छी तरह मिलकर एक नमूना बनाएं ताकि उसमें से लगभग आधा किलो मृदा का नमूना लें जो समूचे खेत का प्रतिनिधित्व करता हो।

हर नमूने के साथ अपना नाम, पता और खेत के नबंर का लेबल लगाएं। अपने रिकार्ड के लिए भी उसकी एक नकल रख लें। दो लेबल तैयार करें। एक थैली के अंदर डालने के लिए तथा दूसरा बाहर लगाने के लिए। लेबल कभी भी स्याही से न लिखें। हमेशा कलर पेन्सिल से लिखें।

सूचना मार्ग

खेत व खेत की फसलों का पूरा योग्य सूचना पर्चे में लिखें। यह सूचना आपकी मृदा की रिपोर्ट व सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने में सहायक होगी। सूचना पर्चा कृषि विभाग के अधिकारी से प्राप्त की जा सकती है।

ये जानकारी अवश्य दें

खेत का नंबर, नाम

नमूना लेने की तिथि

अपना पता

नमूना का प्रयोग (बीज वाली फसल और किस्म)

मृदा का स्थानीय नाम

भिमी की किस्म (सिंचाई वाली या बरानी)

सिंचाई का साधन

प्राकृतिक निकास और भूमि के नीचे पानी गहराई

भूमि ढलान के बारे में

फसलों की अदल-बदल

खादों या रसायनों का ब्यौरा (जो प्रयोग किया हो)

कोई और समस्या जो भूमि से संबंधित हो।

नमूना बांधना

हर नमूने को एक साफ कपड़े की थैली में डालें। ऐसी थैलियों में नमूने न डालें जो पहले खाद आदि के प्रयोग में लाई जा चुकी हों, या किसी ओर कारण से खराब हों। जैसे ऊपर बताया जा चूका है एक लेबल थैली के अंदर भी डालें। थैली अच्छी तरह से बंद करदे उसे के बाहर भी एक लेबल लगा दें।

परीक्षण कितनी देर बाद करें

कम-से कम 3 या 4 साल के अंतराल पर अपनी भूमि की मृदा का परिक्षण हो जाना अच्छा है। हल्की या नुक्सदार भूमि वाली मृदा के परीक्षण की अधिक आवश्कता है। वर्ष में जब भी भूमि कि स्थिति नमूने लेने योग्य हो, नमूने अवश्य एकत्रित कर लेने चाहिए। यह जरुरी नहीं है कि मृदा का परीक्षण केवल फसल बोने के समय ही आप करें।

मिट्टी परीक्षण कहां कराएं

किसान भाइयों के लिए मिट्टी जांच की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है। अपने-अपने खेत का सही नमूना जिले के मिट्टी जाँच प्रयोगशाला में भेजकर परीक्षण करा लें तथा जांच रिपोर्ट प्राप्त करें।

खरीफ फसलों का बीजोपचार

25 मई से रोहणी नक्षत्र के प्रारंभ होने के साथ किशान खरीफ मौसम के लिए धान, मक्का, मडुआ, उड़द, अरहर, अदरक, तिल, मूंगफली, सुरगुजा आदि की बोवाई के लिए तैयारी शुरू कर देते हैं। इन फसलों की बुआई के पहले जिले के किसान भाइयों को बताना उचित होगा कि खड़ी फसलों में अधिकांश रोग का संक्रमण मुख्य रूप से बीज एवं मिट्टी के द्वारा होता है। बहुत छोटे-छोटे रोगाणु बीज की सतह पर या इसके भीतर स्थिर रहते है। इस प्रकार के दूषित बीजों की बुआई के बाद बीज पर चिपके हुए रोगाणु मिट्टी में अनुकूल वातावरण पाते ही काफी तेजी से वृद्धि कर मिट्टी में बहुत पतला सफेद धागा जैसा रोग के जाल का निर्माण करते हैं। बीज ज्योंही अंकुरित होना प्रारंभ करता है, रोगाणु के सफेद जाल इसके अंदर प्रवेश कर पौधे को छोटी अवस्था में ही सुखा देते हैं। फिर जब पौधा बड़ा होता है तब बीज के द्वारा मिट्टी में पहुंचाए गए रोगाणु हवा के माधयम से उड़कर खड़ी फसल को रोगी बना देते हैं, जिससे उपज में काफी कमी हो जाती है।

बुआई के पहले बीज को अनुशंसित रसायनों से उपचारित कर लेने से फसल को कई प्रकार की बीमारियों से रोका जा सकता है। बीजोपचार में नाममात्र का खर्च होता है। साथ ही एक खर्च से सात गुना लाभ मिलता है। ■

22 साल से मनाया जा रहा है विश्व मृदा दिवस

हमारे जीवन में मिट्टी के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस मनाया जाता है। विश्व मृदा दिवस पर जनसंख्या वृद्धि के कारण होने वाली बढ़ती समस्या पर भी प्रकाश डाला जाता है। इसलिए, खाद्य सुरक्षा की गारंटी के लिए मिट्टी के कटाव को रोकने और उर्वरता बनाए रखने के लिए कार्रवाई की जानी चाहिए।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

हम 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस क्यों मनाते हैं?

पिछले 70 वर्षों में भोजन में विटामिन और पोषक तत्वों की मात्रा में भारी कमी आई है। अनुमान है कि दुनिया भर में 2 अरब लोग सूक्ष्म पोषक कुपोषण से पीड़ित हैं, जिसे इसकी गुप्त प्रकृति के कारण छिपी हुई भूख के रूप में भी जाना जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मृदा विज्ञान संघ ने 2002 में हर साल 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस मनाने का सुझाव दिया था। इसके अतिरिक्त, एफएओ (खाद्य एवं कृषि संगठन) ने थाईलैंड साम्राज्य के नेतृत्व में वैश्विक मृदा भागीदारी के ढांचे के भीतर वैश्विक जागरूकता बढ़ाने के लिए एक मंच के रूप में विश्व मृदा दिवस की आधिकारिक शुरुआत का समर्थन किया। जून 2013 में, एफएओ सम्मेलन ने सर्वसम्मति से विश्व मृदा दिवस का समर्थन किया और 68वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा से इसे औपचारिक रूप से अपनाने के लिए कहा। दिसंबर 2013 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 68वें सत्र ने 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस के रूप में घोषित किया। 5 दिसंबर, 2014 को पहला विश्व मृदा दिवस मनाया गया। थाईलैंड के राजा स्वर्गीय एचएम किंग भूमिबोल अदुल्यादेज का जन्म भी इसी दिन हुआ था। और उन्होंने इस पहल के समर्थन में प्रमुख भूमिका निभाई।

मृदा प्रबंधन से संबंधित बढ़ते मुद्दों को संबोधित करते हुए, मृदा के बारे में जागरूकता बढ़ाते हुए, तथा मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिए समाज को प्रेरित करते हुए, विश्व मृदा दिवस 2024 की थीम, "मृदा की देखभालः माप, निगरानी" रखा गया है। स्वस्थ पारिस्थितिकी के लिए जरूरी मृदा की देखभाल और उसकी निगरानी कितनी अहम है, यही इस थीम में दिखता है। ■

अफ़्रीकी चीतों की मौत की क्या है वजह?

बात साल भर पुरानी है। 28 फ़रवरी, 2023 को ईरान में 'पिरोज़' नाम ट्रेंड कर रहा था। सोशल मीडिया पर लोग #RIPPirouz लिख उसे अलविदा कह रहे थे। तमाम कोशिशों के बावजूद पिरोज़ की किडनी फेल हो गई और वो चल बसा। पिरोज़ की किडनियां फेल हो रहीं थीं और उसे ईरान के सेंट्रल वेटरिनरी अस्पताल में डायलेसिस पर रखा गया था। उसे 10 माह का होने में महज़ दो दिन ही बाक़ी थे। अपने तीन भाइयों में पिरोज़ अकेला इतना लंबा जी सका था। पिछले वर्ष उसकी माँ ने तीन चीते के बच्चों को क़ैद में रहते जन्म दिया था। ईरान की ये एक और नाक़ाम कोशिश साबित हो रही थी चीतों को अपने अपने यहां बसाने की जबकि एक ज़माने में ईरान में चीते हज़ारों की तादाद में पाए जाते थे।

■ नितिन श्रीवास्तव

इस घटना के क़रीब एक महीने बाद, 27 मार्च 2023 को भारत के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में साशा नाम के चीते ने भी किडनी फेल हो जाने से दम तोड़ दिया। साशा उन आठ नमीबीयाई चीतों में से एक था जिसे पिछले सितंबर ही मध्य प्रदेश के इस राष्ट्रीय उद्यान में लाकर बसाए जाने की पहल की गई थी। भारत में 1952 में चीते को विलुप्त घोषित कर दिया था। उसके बाद पिछले साल पीएम मोदी के जन्मदिन पर 17 सितंबर को नामीबिया से आठ चीते लाए गए। कुछ महीने बाद दक्षिण अफ़्रीका से 12 चीते लाए गए। कुछ सप्ताह पहले एक मादा चीते ने चार स्वस्थ चीतों को पैदा किया। 27 मार्च को साशा और 22 अप्रैल को उदय नामक चीते की मौत हो गई। इस तरह कूनो नेशनल पार्क में अब कुल 22 चीते हैं।

साशा का इलाज करने वाले मेडिकल स्टाफ़ के मुताबिक़, "जब से वो कूनो आया था तब से उसकी तबीयत थोड़ी ढीली रहती थी क्योंकि शायद किडनी का इन्फ़ेक्शन उसे नामीबिया में ही हो गया था। इसीलिए उसे 'बोमा' क्वारंटाइन वाले इलाक़े में ही ज़्यादा रखा गया था।" लेकिन अब एक और मौत हुई है, जो ये सोचने पर मजबूर करती है कि आख़िर चीतों की मौत की वजह क्या है। 22 अप्रैल को, कूनो राष्ट्रीय उद्यान में एक और चीते उदय की मौत बेहद रहस्यमय तरीक़े से हो गई। नामीबिया से आठ चीते आने के बाद दक्षिण अफ़्रीका से 12 और चीते बसाने के लिए कूनो लाए गए थे। छह साल का उदय उनमें से एक था। मध्य प्रदेश के प्रमुख वाइल्डलाइफ़ वॉर्डन जेएस चौहान ने बताया, "चीतों का हम लोग रोज़ इंस्पेक्शन करते हैं और शनिवार को हमारी टीम ने उदय को बिल्कुल स्वस्थ पाया था। रविवार को जब टीम निरीक्षण के लिए गई तब उदय कमज़ोर लगा और वो सिर झुका कर चल रहा था। फिर उसे ट्रैंकक्वलाइज़ करके इलाज के लिए लाया गया, लेकिन इस दौरान उसने दम तोड़ दिया।"

जेएस चौहान के मुताबिक़, "प्रारम्भिक पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट हार्ट अटैक की ओर इशारा करती है। पूरी रिपोर्ट आने का इंतज़ार है, जिसमें ब्लड टेस्ट रिपोर्ट सभी बातों को विस्तार से बता सकेगी।" बीबीसी से हुई एक ख़ास बातचीत में

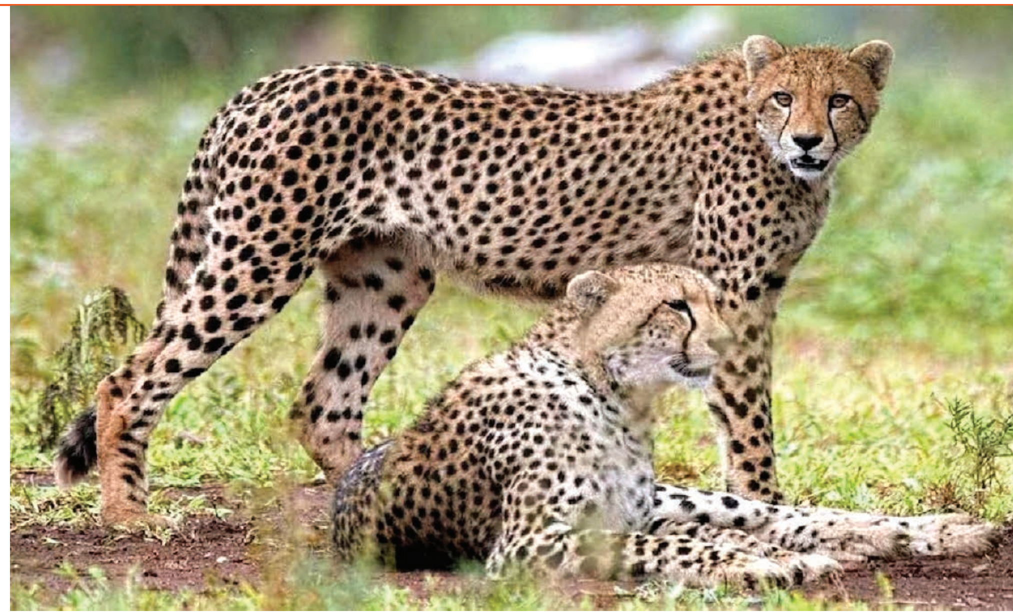

चीता कंज़र्वेशन फंड की निदेशक लॉरी मार्कर ने सोमवार को नामीबीया से बताया, "बतौर वैज्ञानिक हम लोग नेक्रोपसी टेस्ट- जिससे जानवरों की मौत की वजह पता चलती है- का इंतज़ार करेंगे। साथ ही अगर स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या उभर रही है तो उसका हल निकाला जाएगा जिससे भविष्य में मौतें न हों।"

चीते और किडनी फ़ेल होने का इतिहास

ग़ौरतलब है कि चीतों की मौत होने का एक बड़ा कारण किडनी फ़ेल होना है, जिसे वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने शोध से साबित करने की कोशिश की है। अमेरिकी सरकार के नेशनल सेंटर ऑफ़ बायोटेक्नोलोजी इन्फ़र्मेशन ने साल 1967-2014 के बीच 243 ऐसे चीतों पर शोध किया था जो क़ैद में रह रहे थे। एमिली मिचेल के नेतृत्व में किए गए इस गहन शोध में पाया गया कि, "क़ैद में रहने वाले कुछ चीतों में कम उम्र से ही किडनी ख़राब होने के लक्षण सामने आने लगते हैं जो आगे चल कर जानलेवा बन जाते हैं।" शोध इस नतीजे पर पहुँचा कि क़ैद में या किसी कंट्रोल्ड माहौल में रहने वाले चीते अत्यधिक तनाव लेते हैं, जिसका एक असर उनकी किडनी पर पड़ता है।" चीतों के संरक्षण के लिए काम करने वाली नामचीन संस्था 'चीता कंज़रवेशन फंड' के एक रिसर्च पेपर ने भी इस बात को ओर ध्यान दिया है कि चीतों में किडनी फेल होने के लक्षणों को शुरुआत में ही कैसे पकड़ लिया जाए जिससे उनका सफल इलाज हो सके।

मध्य प्रदेश में चीते

बहरहाल, मध्य प्रदेश के 1।15 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल वाले कूनो राष्ट्रीय उद्यान में छोड़े जाने से पहले पांच-सात साल उम्र वाले सभी 20 चीतों को एक महीने तक क्वॉरंटीन ज़ोन में रखा गया था, जिससे वे इस आबोहवा के आदी हो सकें। अगले चरण में इन चीतों को क्वारंटीन ज़ोन से बाहर चार वर्ग किलोमीटर के इलाक़े में रखा गया, जिससे कि ये जंगली जानवरों और शिकार वग़ैरह के आदी हो सकें। भारत में नामीबिया से आठ चीते लाए गए और दक्षिण अफ़्रीका से 22 चीते। इनमें से अब 18 जीवित हैं। भारत आने वाले चीतों को अभयारण्यों से ही लिया गया है, जहाँ उनका प्रजनन उचित ढंग से किया गया है। दक्षिण अफ़्रीका में लगभग 50 ऐसे अभयारण्य हैं, जिनमें 500 वयस्क चीते हैं। चीता कंज़र्वेशन फंड की निदेशक लॉरी मार्कर ने बीबीसी से हुई एक ख़ास बातचीत में नामीबिया से बताया, "इस प्रोजेक्ट के लिए हमने ख़ासी मेहनत की थी और उम्मीद है कि सब अच्छा रहेगा। ये चीते शेरों और तेंदुओं के अलावा दूसरे जानवरों के आसपास रहते हुए पले-बढ़े हैं। भारत में भी ये अपना घर बसा लेंगे। थोड़ा समय दीजिए, बस।"

लॉरी मार्कर के मुताबिक़, उनकी "टीम ने कूनो राष्ट्रीय उद्यान को इन चीतों के बसाए जाने के लिए बेहद उपयुक्त पाया था। इसलिए वे यहाँ लाए गए। मैं ख़ुद पहली खेप के साथ भारत आई थी और सभी पैमाने विश्व-स्तरीय रहे हैं।"

दिलचस्प जानकारियाँ

- बाघ, शेर या तेंदुए की तरह चीते दहाड़ते नहीं हैं, उनके गले में वो हड्डी नहीं होती जिससे ऐसी आवाज़ निकल सके, वे बिल्लियों की तरह धीमी आवाज़ निकालते हैं और कई बार चिड़ियों की तरह बोलते हैं
- चीता दुनिया का सबसे तेज़ दौड़ने वाला जीव है लेकिन वह बहुत लंबी दूरी तक तेज़ गति से नहीं दौड़ सकता, अमूमन ये दूरी 300 मीटर से अधिक नहीं होती
- चीते दौड़ने में सबसे भले तेज़ हों लेकिन कैट प्रजाति के बाकी जीवों की तरह वे काफ़ी समय सुस्ताते हुए बिताते हैं
- गति पकड़ने के मामले में चीते स्पोर्ट्स कार से तेज़ होते हैं, शून्य से 90 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार पकड़ने में उन्हें तीन सेकेंड लगते हैं
- चीता का नाम हिंदी के शब्द चित्ती से बना है क्योंकि इसके शरीर के चित्तीदार निशान इसकी पहचान होते हैं
- चीता कैट प्रजाति के अन्य जीवों से इस मामले में अलग है कि वह रात में शिकार नहीं करता
- चीते की आँखों के नीचे जो काली धारियाँ आँसुओं की तरह दिखती है वह दरअसल सूरज की तेज़ रोशनी को रिफ़लेक्ट करती है जिससे वे तेज़ धूप में भी साफ़ देख सकते हैं

चिंताएं भी अनेक

दुनिया भर में इस समय चीतों की संख्या लगभग 7,000 है, जिनमें से आधे से ज़्यादा चीते दक्षिण अफ़्रीका, नामीबिया और बोत्सवाना में मौजूद हैं। भारत ने 1950 के दशक में चीते को विलुप्त घोषित कर दिया था। उस समय देश में एक भी जीवित चीता नहीं बचा था। वैसे ये पहला मौक़ा है, जब किसी इतने बड़े मांसाहारी जानवर को एक महाद्वीप से निकालकर दूसरे महाद्वीप के जंगलों में लाया गया। विशेषज्ञ कहते हैं कि जंगली चीतों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना काफ़ी चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि चीते इंसानों की नज़दीकी और पिंजड़ों की वजह से तनाव में आ जाते हैं। बाघों पर लंबे समय से स्टडी करते रहे वाइल्ड लाइफ फ़िल्ममेकर अजय सूरी ने बताया, "बाघों को दूसरे अभयारण्यों से यहां लाकर बसाना संभव है, लेकिन जब तक ये हो न जाए, इस बारे में ज़्यादा अनुमान नहीं लगा सकते।" वैसे सितंबर में अपने कूनो आगमन के बाद से चीतों की संख्या बढ़ी भी है, क्योंकि 70 साल बाद चार स्वस्थ चीते भी कूनो में पैदा हुए हैं। ■

(साभार:बीबीसी हिंदी)

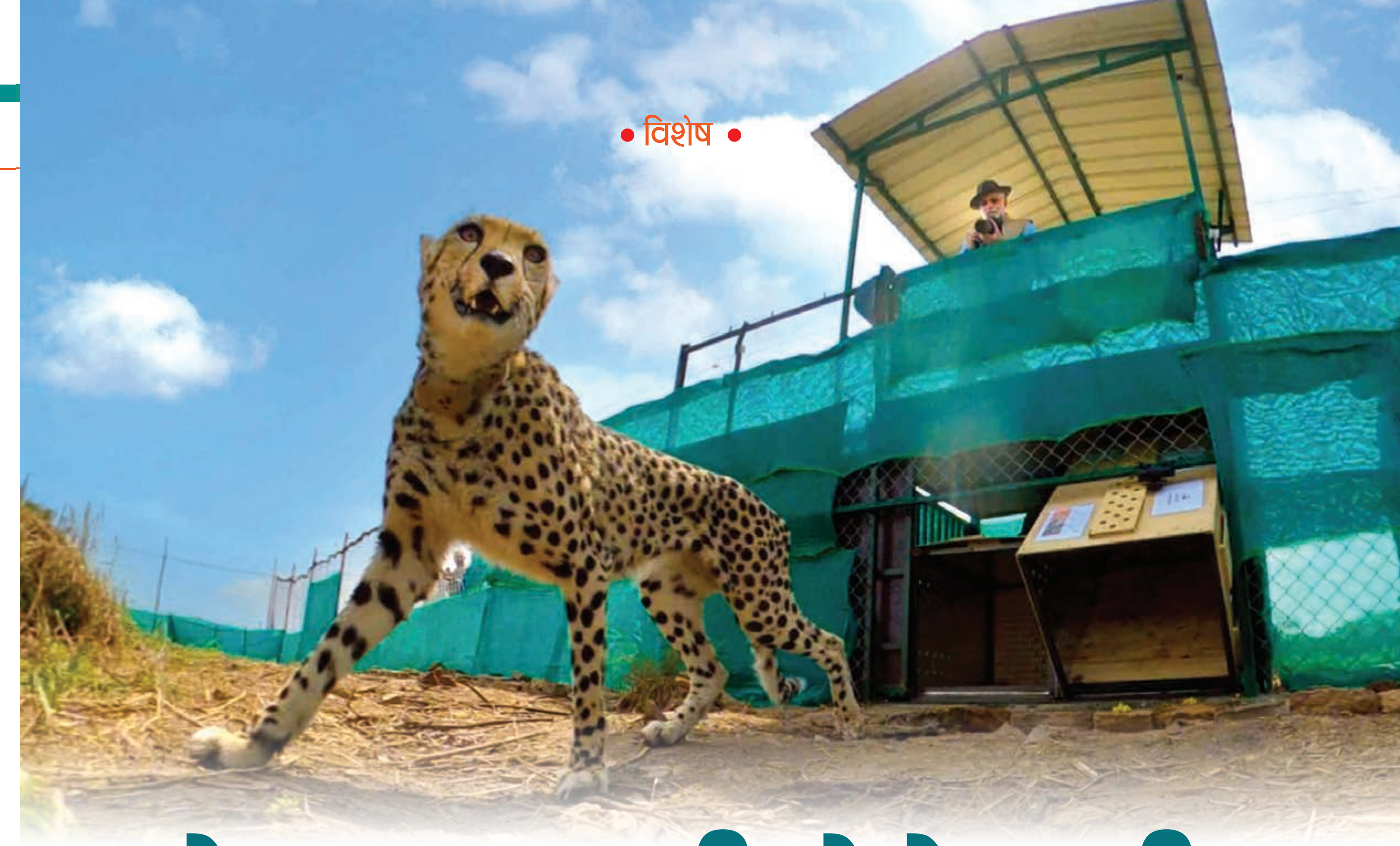

दो साल बाद भी प्रोजेक्ट चीता सफल नहीं तो क्यों?

देश में चीता प्रोजेक्ट को शुरू हुए दो साल हो गए हैं, लेकिन चीते अभी भी पिंजरों में बंद हैं। उन्हें शिकार दिया जाता है और जरूरत पड़ने पर खाना खिलाया जाता है। ये अभी जंगल में पूरी तरह से स्वतंत्र होकर नहीं घुम पा रहे हैं।

■ पी नवीन

भारत के 'प्रोजेक्ट चीता' पर पूरी दुनिया की नजर रही है। सितंबर 2022 में नामीबिया से 8 चीते भारत लाए गए और मध्य प्रदेश के कूनो नेशनल पार्क में छोड़े गए। यह एक ऐतिहासिक पल था क्योंकि भारत में लगभग 8 दशकों बाद चीते वापस आए थे। लेकिन अगस्त 2024 तक, 25 में से सिर्फ एक चीता ही खुले में घूम रहा है, जिसका नाम पवन है। यह प्रोजेक्ट इसलिए शुरू किया गया था ताकि भारत में चीतों की आबादी फिर से बढ़ सके। लेकिन दो साल बाद भी, ज्यादातर चीते अभी भी बाड़ों में बंद हैं। सिर्फ पवन ही आजाद है और अपनी मर्जी से जंगल में घूमता है। वन अधिकारियों का कहना है कि पवन हवा की तरह है, उसे पकड़ना मुश्किल है। उम्मीद थी कि सभी चीते पवन की तरह जंगल में आजाद होंगे, शिकार करेंगे और बच्चे पैदा करेंगे। प्रोजेक्ट चीता को शुरू हुए लगभग दो साल होने वाले हैं। इस प्रोजेक्ट में कुछ अच्छी बातें हुई हैं, लेकिन चीतों को जंगल में आज़ाद करने में अभी तक कामयाबी नहीं मिली है। अधिकारियों का कहना है कि प्रोजेक्ट तय लक्ष्यों से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है।

चीतों की संख्या उम्मीद से ज्यादा बढ़ी

कूनो में चीता प्रोजेक्ट बहुत अच्छा रहा है। चीतों के बच्चे ज्यादा हो रहे हैं और वे स्वस्थ भी हैं। शुरुआत में उम्मीद थी कि चीता की संख्या हर साल 5% बढ़ेगी। लेकिन कूनो में चीतों की संख्या उम्मीद से ज्यादा बढ़ी है। कूनो में अब 25 चीते हैं- 13 बड़े और 12 बच्चे। बड़े चीतों के बचने की संभावना 65% है जो की योजना से कहीं ज्यादा है। पहले उम्मीद थी कि केवल 50% बड़े चीते ही बच पाएंगे। सबसे अच्छी बात यह है कि 70.5% चीते के बच्चे जीवित हैं। यह दर्शाता है कि चीते स्वस्थ हैं और प्रोजेक्ट तेजी से सफलता की ओर से बढ़ रहा है।

कुछ सवाल 'प्रोजेक्ट चीता' पर सवाल उठाते हैं

क्या भारत में चीतों को जंगल में छोड़ना सही फैसला था? क्या बिना कड़ी निगरानी के चीते जंगल में जीवित रह पाते? ये सवाल 'प्रोजेक्ट चीता' की सफलता पर सवाल उठाते हैं। 'प्रोजेक्ट चीता' के तहत भारत लाए गए चीतों को शुरुआत में दो महीने के लिए जंगल के माहौल में ढाला जाना था और उसके बाद उन्हें पूरी तरह से आजाद कर देना था। दिसंबर 2023 में 'प्रोजेक्ट चीता' की संचालन समिति ने चीतों को कूनो नेशनल पार्क में छोड़ने की सैद्धांतिक मंजूरी भी दे दी थी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। चीतों को अभी भी लगातार निगरानी में रखा जा रहा है। 'प्रोजेक्ट चीता' की सफलता नियंत्रित वातावरण का नतीजा है जहां चीतों की 24 घंटे निगरानी की जाती है, पशु चिकित्सक हमेशा मौजूद रहते हैं और जरूरत पड़ने पर उन्हें खाना भी दिया जाता है। यह सही मायने में जंगली जीवन नहीं है।

सवाल यह है कि अगर चीतों को शुरुआती परिचय के बाद सीधे जंगल में छोड़ दिया जाता, तो क्या नतीजे होते? लेकिन सवाल यह है कि ... क्या ये आंकड़े तब सामने आते, चीतों को थोड़ी अवधि के अनुकूलन के बाद जंगलों में मुक्त कर दिया जाता? प्रोजेक्ट चीता की सफलताएं एक बहुत ही नियंत्रित वातावरण का उत्पाद हैं। 24x7 निगरानी है, पशु चिकित्सक हैं हाथ, और यहां तक कि जरूरत पड़ने पर फीड की व्यवस्था भी की जाती है। याद रखें, मूल योजना सभी चीतों को भारत में दो महीने के अनुकूलन के बाद जंगल में छोड़ने की थी। दिसंबर 2023 में वापस, संचालन समिति ने सैद्धांतिक मंजूरी दे दी थी कूनो के जंगल में चीतों को छोड़ने के लिए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ है।

चीतों की फिटनेस पर असर पड़ेगा

कूनो में चीतों को खुले में छोड़ने की योजना पर सवाल उठ रहे हैं। विशेषज्ञों को चिंता है कि लंबे समय तक बाड़े में रहने से चीतों की शिकार करने की क्षमता और फिटनेस पर असर पड़ेगा। चीतों की आबादी बढ़ने से यह चिंता और भी बढ़ गई है। शुरुआती योजना के मुताबिक कूनो में 15 साल में चीतों की संख्या इतनी हो जाएगी कि जितनी की देखभाल यह जंगल कर सकता है। लेकिन, चीतों की संख्या अनुमान से ज़्यादा तेजी से बढ़ी है। इससे जगह की कमी और तनाव की स्थिति पैदा हो रही है। एक वन अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, 'हमें कार्य योजना को संशोधित करने की आवश्यकता है।'

चीतों को ढूंढना और उन्हें वापस लाना चुनौती

शुरुआती योजना में माना गया था कि 3,200 वर्ग किलोमीटर का कूनो जंगल 21 चीतों को रख सकता है। लेकिन हाल के सर्वेक्षणों से पता चलता है कि कूनो में वास्तव में लगभग 12 चीते ही रह सकते हैं। चीते 600 वर्ग किलोमीटर से लेकर 3,000 वर्ग किलोमीटर तक के क्षेत्र में घूमते हैं। यही कारण है कि कूनो में छोड़े जाने के बाद ही चीते जंगल से बाहर निकलने लगे। वन अधिकारियों के लिए चीतों को ढूंढना और उन्हें वापस लाना एक बड़ी चुनौती बन गया। पवन और आशा नाम के दो चीते कूनो से 100 किलोमीटर तक दूर चले गए। वे कूनो से काफी दूर मानव आबादी के पास पहुंच गए। इससे इंसानों और चीतों के बीच संघर्ष का डर पैदा हो गया। इस डर के कारण चीतों को वापस बाड़ों में लाने का फैसला किया गया। पवन को छोड़कर सभी को वापस बाड़ों में डाल दिया गया।

चीतों को भारत के मॉनसून में दिक्कत

दक्षिण अफ्रीका से लाए गए चीतों को भारत के मॉनसून में दिक्कत आई। जून से अगस्त तक, भारत में बारिश का मौसम होता है। मध्य प्रदेश में यह समय उमस भरा भी होता है। अफ्रीकी चीते इन महीनों में ठंड से बचने के लिए घने बाल उगाते हैं। लेकिन भारत के नमी वाले मौसम में, उनके इन्हीं बालों की वजह से उन्हें त्वचा में संक्रमण होने लगा। कई बार रेडियो कॉलर ने भी समस्या बढ़ा दी। इससे कुछ चीतों की मौत भी हो गई। दक्षिण अफ्रीका के पशु चिकित्सा विशेषज्ञ एड्रियन टॉरडिफ ने पहले ही अनुमान लगाया था कि चीते भारतीय मौसम के अनुकूल ढल जाएंगे। उनकी बात सही साबित हुई और इस साल मानसून तक चीते खुद को मौसम के हिसाब से ढालने लगे।

> **पहाड़ों में होने वाली बर्फ वसंत और ग्रीष्म ऋतु में पिघलने तक पहाड़ों में ही जमा रहती है और नीचे की ओर बस्तियों, कृषि और उद्योगों के लिए आवश्यक जल उपलब्ध कराती है। वास्तव में, अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में, लगभग 90% नदी का पानी पहाड़ों से आता है।**

तेंदुए और चीतों के बीच शिकार को लेकर संघर्ष

कूनो नेशनल पार्क में चीतों के आने से तेंदुए और चीतों के बीच शिकार को लेकर टेंशन हो गई है। पहले से ही कूनो में रहने वाले तेंदुए को अब चीतों से अपने शिकार के इलाके में मुकाबला मिल रहा है। एक्सपर्ट्स को डर है कि कहीं शिकार कम ना पड़ जाए। इसलिए 1000 से भी ज्यादा चीतल अभी तक दूसरे जगहों से लाकर कूनो में छोड़े जा चुके हैं, और आगे भी छोड़े जाएंगे। लेकिन अधिकारियों के मुताबिक बहुत से चीतल तो तेंदुए का खाना बन चुके हैं। डर इस बात का है कि एक ही जगह पर बहुत सारे शिकारी जानवर होने से शिकार की कमी हो सकती है, जिससे उनमें खाने के लिए लड़ाई बढ़ सकती है। इस पर रिसर्च करने वाली संस्था 'वाइल्ड लाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया' जल्द ही अपनी रिपोर्ट देने वाली है। अभी तक तेंदुए और चीते के बीच लड़ाई की कोई खबर नहीं आई है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आगे भी सब कुछ ठीक ही रहेगा।

भारतीय तेंदुए पिछले 75 सालों से चीतों के साथ नहीं रहे

एक एक्सपर्ट ने अपना नाम न बताने की शर्त पर बताया, 'अफ्रीका में, शेर और तेंदुए अक्सर चीतों को मारकर उनका शिकार छीन लेते हैं और उनके बच्चों को भी नहीं छोड़ते। हालांकि भारतीय तेंदुए अफ्रीकी तेंदुओं से छोटे और कम आक्रामक होते हैं, फिर भी उनकी मौजूदगी खतरा पैदा कर सकती है।' उन्होंने यह भी कहा, 'भारतीय तेंदुए पिछले 75 सालों से चीतों के साथ नहीं रहे हैं, इसलिए यह कहना मुश्किल है कि आगे जाकर वह चीतों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे।' कूनो में चीतों को दो साल बाद भी जंगली जानवरों का शिकार करने में दिक्कत आ रही है। अधिकारियों को अक्सर उन्हें जिंदा बकरे और भैंसे मारकर खिलाने पड़ते हैं। कूनो के अधिकारी चीतों पर कड़ी नज़र रखते हैं। एक अधिकारी ने बताया, 'अगर हमें कोई चीता भूखा दिखता है, तो हम समझ जाते हैं कि उसे दो-तीन दिनों से शिकार नहीं मिला है। ऐसे में हम उसे तैयार मांस खिलाते हैं।'

विटामिन और मिनरल्स का रखा जाता है ध्यान

अंतर्राष्ट्रीय चीता विशेषज्ञ का कहना है कि शुरुआत में जब चीतों ने शिकार किया था, तो उन्होंने शिकार का पूरा मांस खाया था। उन्होंने कहा, 'मैंने पहले कभी किसी चीते को इतनी सफाई से शिकार खाते नहीं देखा। वे वास्तव में जंगली शिकार चाहते हैं।' विशेषज्ञ ने बताया कि फिलहाल चीते निगरानी में रहते हुए खुद शिकार कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'अगर किसी कारण से कोई चीता शिकार नहीं कर पाता है, तो हमारी टीम उसे खाना देती है।' जब चीते क्वारंटीन में थे, तो उन्हें भैंस का मांस दिया जाता था। इसमें विटामिन और मिनरल्स भी मिलाए जाते थे जो उन्हें आमतौर पर शिकार से मिलते हैं।

ये हैं बड़ी चुनौतियां

वन्यजीव विशेषज्ञों ने कूनो अधिकारियों से चीतों के खाने का पूरा रिकॉर्ड रखने को कहा है। इसमें कितना मांस दिया गया और कितना खाया गया, इसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए। कूनो नेशनल पार्क में चीतों को बसाने की कोशिशों में नई चुनौतियां सामने आ रही हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि चीतों के प्रजनन, स्वास्थ्य और अनुकूलन क्षमता पर विशेष ध्यान देना होगा। 'प्रोजेक्ट चीता' को एक प्रयोग के तौर पर देखा जा रहा है, जिसमे यह पता लगाया जा रहा है कि क्या अफ्रीकी चीते भारतीय परिवेश में जीवित रह सकते हैं। एक बड़ी चिंता चीतों में प्रजनन को लेकर है। पवन नाम के चीते ने पहले ही दो बार संतानें पैदा कर ली हैं और उसके लगातार कूनो में रहने से करीबी रिश्तेदारों के बीच प्रजनन का खतरा बढ़ सकता है। ऐसा होने से आनुवंशिक विविधता कम होती है और बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। ■

• विशेष •

क्यों मनाते हैं चीता दिवस?

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस 4 दिसंबर को है और हम प्रकृति की अद्भुत, गति के लिए बनी मशीन-चीतों का जश्न मनाने के लिए तैयार हो रहे हैं। चीते अविश्वसनीय रूप से तेज़ और बेहद खूबसूरत जानवर हैं। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि चीते अफ्रीका में सबसे ज़्यादा खतरे में पड़ी बड़ी बिल्लियाँ हैं? यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमें इन शानदार जानवरों का सम्मान और संरक्षण करना चाहिए! उसके पहले हमें यह जानना चाहिए कि चीता है कौन? इसकी खासियत क्या है?

बिल्ली के कुल (विडाल) में आने वाला चीता (एसीनोनिक्स जुबेटस) अपनी अदभुत फुर्ती और रफ्तार के लिए पहचाना जाता है। यह एसीनोनिक्स प्रजाति के अंतर्गत रहने वाला एकमात्र जीवित सदस्य है, जो कि अपने पंजों की बनावट के रूपांतरण के कारण पहचाने जाते हैं। इसी कारण, यह इकलौता विडालवंशी है जिसके पंजे बंद नहीं होते और जिसकी वजह से इसकी पकड़ कमज़ोर रहती है। ज़मीन पर रहने वाला ये सबसे तेज़ जानवर है जो एक छोटी सी छलांग में 120 किमी॰ प्रति घंटे तक की गति प्राप्त कर लेता है और 460 मी. तक की दूरी तय कर सकता है और मात्र तीन सेकेंड के अंदर ये अपनी रफ्तार में 103 किमी॰ प्रति घंटे का इज़ाफ़ा कर लेता है, जो अधिकांश सुपरकार की रफ्तार से भी तेज़ है। हालिया अध्ययन से ये साबित हो चुका है कि धरती पर रहने वाला चीता सबसे तेज़ जानवर है।

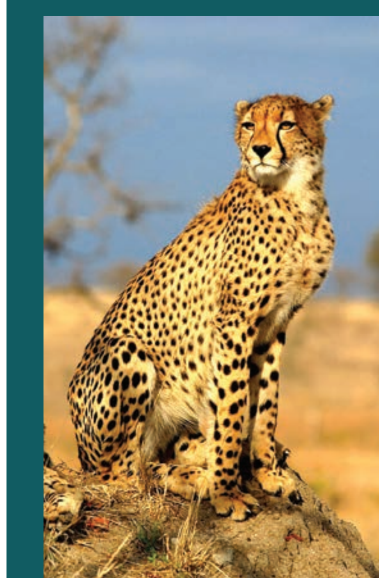

अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस का इतिहास

अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस की शुरुआत कैसे हुई, इसकी कहानी एक फिल्म के रूप में बनाई जा सकती है। यह सब 1977 में शुरू हुआ, जब अमेरिकी प्राणी विज्ञानी डॉ. लॉरी मार्कर खय्याम नामक चीते को नामीबिया ले गईं, जिसे उन्होंने ओरेगन में वन्यजीव सफारी में एक शावक के रुप में पाला था। यह निर्धारित करने के लिए एक प्रयोग का हिस्सा था कि क्या कैद में रखे गए चीतों को फिर से जंगल में शिकार करना और रहना सिखाया जा सकता है?

प्रयोग सफल रहा और वह और खय्याम अमेरिका वापस लौट आए। नामीबिया में रहने के दौरान डॉ. मार्कर ने पाया कि पशुपालक जंगल में चीतों की आबादी के लिए खतरा पैदा कर रहे थे। वे चीतों को सख्ती से खत्म कर रहे थे क्योंकि वे उनके पशुओं के लिए खतरा बन रहे थे। नामीबिया के किसानों और चीतों के बीच मतभेद को दूर करने में मदद करने के लिए दृढ़ संकल्पित डॉ. मार्कर ने जंगली चीतों को संरक्षित करने की कसम खाई और 1991 में चीता संरक्षण कोष की स्थापना की। उन्होंने स्थानीय लोगों से बातचीत की और उन्हें वन्यजीव संरक्षण के बारे में शिक्षित किया। उनकी स्मृति के सम्मान में, डॉ. मार्कर ने चीता संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए खय्याम के जन्मदिन को चुना। 2010 से, दुनिया 4 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस मना रही है ताकि उनके विलुप्त होने के खतरे के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके।

दुख की बात है कि जंगली चीतों के फर के लिए अत्यधिक शिकार और बढ़ती मानवीय बस्तियों के कारण उनके आवास के नुकसान के कारण, 2020 तक जंगल में केवल 7,100 चीते बचे हैं। यह पिछले चार दशकों में 50% की चौंकाने वाली गिरावट है। ■

• विशेष •

जगुआर है तीसरी सबसे बड़ी बिल्ली

बाघों और शेरों के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी बिल्ली, जगुआर की लंबाई लगभग 2.5 मीटर तक हो सकती है और इसका वजन 113 किलोग्राम तक हो सकता है, जो बड़े शिकार का शिकार करने के लिए आवश्यक है। हालांकि यह ध्यान देने योग्य है कि वे विभिन्न क्षेत्रों में आकार में बहुत भिन्न हो सकते हैं। जगुआर तेंदुए की तरह दिखते हैं, उनका फर भूरे या नारंगी रंग का होता है और "रोसेट्स" नामक धब्बे अक्सर केंद्रीय बिंदुओं के एक जटिल पैटर्न की विशेषता रखते हैं।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

जगुआर कहां रहते हैं?

जगुआर अमेरिका में रहने वाली एकमात्र बड़ी बिल्ली है। इन्हें प्राचीन संस्कृतियों में भगवान के रूप में पूजा जाता था। ये ज़्यादातर वर्षावनों और उष्णकटिबंधीय आर्द्रभूमि में पाये जाते हैं। नेशनल जियोग्राफ़िक के अनुसार, जगुआर ने कभी मध्य अर्जेंटीना से लेकर अमेरिका के दक्षिण-पश्चिम तक के विशाल क्षेत्र में अपना कब्ज़ा जमा रखा था, लेकिन 1880 के दशक से वे इस क्षेत्र का आधा हिस्सा खो चुके हैं। अब वे मुख्य रूप से अमेज़ॅन बेसिन और पैंटानल में बहुत कम संख्या में पाए जाते हैं। डब्ल्यू डब्ल्यूएफ का अनुमान है कि ब्राज़ील में जगुआर की बची हुई आधी आबादी हो सकती है।

जगुआर क्या खाते हैं?

तैराकी में माहिर जगुआर मछलियों, कछुओं और यहां तक कि कैमन का भी शिकार करते हैं! इन मांसाहारी बिल्लियों का आहार मांस से भरपूर होता है, जिसमें हिरण, कैपीबारा और यहां तक कि दक्षिण अमेरिका का सबसे बड़ा जानवर टैपिर भी शामिल है। जगुआर रात के साथ-साथ दिन में भी सक्रिय होते हैं, जिसका अर्थ है कि वे रात और दिन में शिकार करने में सक्षम हैं, अक्सर भोजन की तलाश में छह मील से अधिक की यात्रा करते हैं।

जगुआर परिवारों के बारे में

मादा जगुआर आम तौर पर दो शावकों को जन्म देती है, हालांकि कभी-कभी चार शावकों को भी जन्म दे सकती है। जगुआर शावक अंधे पैदा होते हैं। इसलिए पूरी तरह से अपनी माँ पर निर्भर होते हैं। वे लगभग दो साल तक उसके साथ रहते हैं, जबकि वह उन्हें शिकारियों, यहाँ तक कि उनके पिता से भी, तब तक पूरी तरह से बचाती है जब तक कि वे खुद की रक्षा करने के लिए तैयार नहीं हो जाते।

जगुआर को खतरे

वन्यजीव संरक्षण सोसायटी के अनुसार जगुआर विलुप्त होने के कगार पर है और इन्हें मुख्य रूप से मनुष्यों से खतरा है।

1. बड़े पैमाने पर कृषि के लिए वनों की कटाई जैसे कि फैक्ट्री फूड फार्म और मवेशी फार्म।
2. बांधों का निर्माण उस पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव डालता है जिस पर जगुआर जीवित रहने के लिए निर्भर करता है।
3. अपने पशुधन की रक्षा करने वाले किसानों द्वारा जगुआर का शिकार।
4. क्रूर अवैध शिकारी पारंपरिक एशियाई चिकित्सा में उपयोग के लिए त्वचा, पंजे, दांत और अन्य भागों से लाभ कमाने की तलाश में रहते हैं। ■

• विशेष •

कछुए का कवच फाड़ देता है जगुआर

दुनिया जीवंत वन्यजीवों का घर है। पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने के लिए गैर-पालतू जानवरों का समूह आवश्यक है। बड़ी बिल्लियाँ अक्सर वन्यजीव समूहों पर हावी होती हैं। यहां हम दो शक्तिशाली बिल्लियोः तेंदुए और जगुआर के बीच अंतर पर चर्चा कर रहे हैं।

■ ट्विंकल

जगुआर

जगुआर बड़ी बिल्ली प्रजातियों का एक लोकप्रिय सदस्य है। अमेरिका में सबसे बड़ी और तीसरी सबसे बड़ी बिल्ली का वजन 158 किलोग्राम तक होता है और यह 1.85 मीटर तक बढ़ती है। जगुआर के पास हल्के पीले से लेकर भूरे रंग के फर के अनोखे कोट होते हैं जो किनारों पर रोसेट जैसे धब्बों से ढके होते हैं। हालाँकि, ये रोसेट तेंदुए या चीते से अलग होते हैं। कुछ सीमाओं में, एक मेलेनिस्टिक ब्लैक कोट जगुआर भी पाया जाता है।

जगुआर के दांत और जबड़े कितने ताकतवर होते हैं, इसका अंदाजा आप सहसा लगा सकते हैं। ये अपने शक्तिशाली दांत से कछुओं और कछुओं के कवच को आसानी से भेद देता है। अनुकरणीय हत्या विधि स्तनधारी शिकार की खोपड़ी के कानों के बीच से सीधे घुसकर मस्तिष्क पर घातक प्रहार करती है।

जगुआर शब्द देशी शब्द 'यागुआर' से आया है, जिसका अर्थ है 'वह जो एक छलांग में मारता है'। तेंदुओं की तुलना में जगुआर के सिर बड़े, गोल तथा पैर छोटे होते हैं, जिनके बीच में काले बिंदु होते हैं। बड़ी बिल्लियाँ बहुत अच्छी तैराक होती हैं और गीले वातावरण में रहना पसंद करती हैं। जगुआर की आवाज़ को 'सॉ' कहा जाता है क्योंकि यह लकड़ी को आरी से काटने जैसी आवाज़ होती है। जगुआर रात्रिचर एवं दिनचर दोनों प्रकार के बड़े जीव हैं, क्योंकि वे दिन और रात दोनों समय शिकार करते हैं। जगुआर के दांत मगरमच्छों की मोटी खाल और कछुओं के कठोर कवच को काटने के लिए काफी मजबूत होते हैं।

जगुआर शक्तिशाली बिल्लियाँ हैं जिन्हें उनके गहरे भूरे रंग के कोट पर उदारतापूर्वक दिखने वाले बोल्ड रोसेट से सबसे आसानी से पहचाना जा सकता है। उनके मोटे-मोटे पैर और छोटे, गोल कान होते हैं। जगुआर सभी बिल्लियों में सबसे मजबूत है। जगुआर नाम दक्षिण अमेरिका की तुपी और गुआरानी भाषाओं से यागुआरेटे शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है सच्चा, भयंकर जानवर और वह जो एक छलांग में मार डालता है। राजसी जगुआर कई लैटिन-अमेरिकी संस्कृतियों के लिए शक्ति का प्रतीक है। यह प्रकृति की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है और इसे वर्षावन के रक्षक के रूप में देखा जाता है।

> जगुआर के दांत और जबड़े कितने ताकतवर होते हैं, इसका अंदाजा आप सहसा लगा सकते हैं। ये अपने शक्तिशाली दांत से कछुओं और कछुओं के कवच को आसानी से भेद देता है। अनुकरणीय हत्या विधि स्तनधारी शिकार की खोपड़ी के कानों के बीच से सीधे घुसकर मस्तिष्क पर घातक प्रहार करती है।

जगुआर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी बिल्ली है और इसका वजन 300 पाउंड से अधिक हो सकता है। हालांकि, उनका आकार क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होता है। मध्य अमेरिका में जगुआर अमेज़ॅन और पैंटानल में पाए जाने वाले जगुआर से छोटे होते हैं। जगुआर पूरी तरह से मांसाहारी होते हैं और उन्हें अवसरवादी शिकारी माना जाता है, जिसका अर्थ है कि वे अपने रास्ते में आने वाले लगभग किसी भी जानवर का शिकार करेंगे। हिरण, पेकेरी, टैपिर, इगुआना, कैपीबारा, आर्मडिलोस और बंदर कई प्रकार के जानवरों में से हैं जो जगुआर का शिकार बनते हैं। जगुआर का शक्तिशाली काटने वाला गुण उन्हें बेहतरीन शिकारी बनाता है; उनके दांतों में मगरमच्छ की खाल और कछुए के खोल को भेदने की ताकत होती है। एक बार जब जगुआर खाने के लिए मांस प्राप्त कर लेते हैं, तो वे अपनी जीभ पर नुकीले उभारों का उपयोग करते हैं, जिन्हें पैपिला कहा जाता है। इससे ये मांस को उसकी हड्डियों से खुरचने का काम लेते हैं।

ये शानदार बिल्लियां मैक्सिको से लेकर अर्जेंटीना तक18 देशों में फैली हुई हैं। ब्राज़ील में दुनिया के लगभग आधे जंगली जगुआर पाए जाते हैं। उनके आवासों में गीले और सूखे जंगल, सवाना और झाड़ियां शामिल हैं। जगुआर अच्छे तैराक और पर्वतारोही होते हैं और जीवित रहने के लिए स्वस्थ मीठे पानी की व्यवस्था और बहुत सारे क्षेत्रों तक पहुँच पर निर्भर होते हैं। ■

अपने घर को छोड़ कर भागना पड़ रहा है जगुआर को

■ आंद्रे डिब

जगुआर अपने निवास वाले पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना और कार्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शीर्ष शिकारियों के रूप में, वे अपने निवास स्थान पर खाद्य श्रृंखला में संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। अन्य प्रजातियों की आबादी को नियंत्रित करने और स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, जगुआर-केंद्रित संरक्षण रणनीति सह-अस्तित्व वाली प्रजातियों के समूह के लिए एक प्रभावी छत्र के रूप में काम कर सकती है।

घटते क्षेत्र और इस प्रकार, प्राकृतिक शिकार तक पहुँच कम होने के कारण, जगुआर भोजन के लिए कहीं और देखने लगे हैं। जगुआर जिस ज़मीन पर कभी रहते थे, वहाँ रहने वाले पशुधन अक्सर भूखे जगुआर का भोजन बन जाते हैं, जिन्हें अपने प्राकृतिक शिकार के बदले इन पालतू जानवरों को खाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। नतीजतन, वे किसानों के शिकार बन जाते हैं जो प्रतिशोध में या अपनी आय की रक्षा के लिए निवारक प्रयास में उन्हें मार सकते हैं।

आवास विनाश और विखंडन

जगुआर मुख्य शिकारी हैं जो मुख्य रूप से रात के समय सक्रिय रहते हैं और जीवित रहने के लिए उन्हें बहुत अधिक क्षेत्र की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्य से, वनों की कटाई और कृषि गतिविधियाँ जगुआर के क्षेत्र पर अतिक्रमण कर रही हैं, जिससे जगुआर की सीमा धीरे-धीरे कम हो रही है और आबादी एक-दूसरे से अलग हो रही है। यह अनुमान लगाया गया है कि जगुआर ने अपनी ऐतिहासिक सीमा का लगभग 50% खो दिया है, जिसमें केवल 14 वर्षों की अवधि में 20% की गिरावट आई है। अल साल्वाडोर और उरुग्वे में ये विलुप्त हो गए हैं।

उनके आवास तेजी से खंडित होते जा रहे हैं, जिसका अर्थ है कि आवास के टुकड़े आकार में कम होते जा रहे हैं और तेजी से अलग-थलग और कम जुड़े हुए होते जा रहे हैं। एक समय जगुआर के शासन वाली भूमि अब कटाई, बड़े पैमाने पर कृषि, खेत और शहरी क्षेत्रों द्वारा नष्ट हो रही है। आवास विखंडन इन बिल्लियों के लिए शिकार करना और संभोग करना अविश्वसनीय रूप से कठिन बना देता है, जो उनकी जनसंख्या संख्या और अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा है।

अवैध वन्यजीव व्यापार

जगुआर की खाल और उसके अंगों के अवैध व्यापार ने समय के साथ उनकी आबादी में गिरावट में बड़ी भूमिका निभाई है। 1960 के दशक में, उत्तरी अमेरिका और यूरोप के अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में आपूर्ति के लिए ब्राज़ील के अमेज़न में सालाना लगभग 15,000 जगुआर की खाल बेची जाती थीं। खाल के लिए जगुआर का शिकार आधिकारिक तौर पर 1970 के दशक तक गैरकानूनी नहीं था, जब जगुआर और उनके अंगों के शिकार और बिक्री पर प्रतिबंध लगाने वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा उपाय लागू किए गए। तब से, जगुआर के अंगों, विशेष रूप से जगुआर की खाल की अंतर्राष्ट्रीय मांग में काफी कमी आई है। हालाँकि, जगुआर के शरीर के अंगों के लिए अवैध घरेलू बाजार बने हुए हैं, जो इस प्रजाति के लिए काफी खतरा पैदा कर रहे हैं। यह बाजार काफी हद तक लोगों और जगुआर के बीच अवसरवादी मुठभेड़ों, मानव-जगुआर संघर्ष और जगुआर के उपयोग से जुड़ी सांस्कृतिक प्रथाओं से प्रेरित है। हाल के वर्षों में, लैटिन अमेरिका और विदेशों में हवाई अड्डों और डाकघरों में जगुआर के दांतों की जब्ती ने जगुआर के अंगों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के फिर से उभरने का संकेत दिया है, जिससे जगुआर की आबादी पर व्यापार के विनाशकारी प्रभावों के बारे में चिंता बढ़ गई है। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी और कनेक्टिविटी में प्रगति ने खरीदारों और विक्रेताओं को वैश्विक रूप से ऑनलाइन जुड़ने में आसानी की है, जिससे जगुआर उत्पादों में अवैध व्यापार को और बढ़ावा मिला है।

जगुआर के अवैध शिकार और तस्करी को खत्म करने के उद्देश्य से कई नए फैसले लिए गए, जिसमें ऑनलाइन व्यापार भी शामिल है। सिटीज कॉप 184 देशों द्वारा हस्ताक्षरित एक संधि है, जो लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा करते हुए वन्यजीवों और पौधों में सतत व्यापार का समर्थन करती है। इन फैसलों में हितधारकों की भागीदारी और सहयोग बढ़ाने, संरक्षण गलियारों की स्थापना, सहयोग तंत्र को मजबूत करने, जगुआर के संरक्षण में निवेश बढ़ाने, इसके आवास सहित, और इस शीर्ष शिकारी के महत्व, इसकी पारिस्थितिकी को बचाने की दिशा में काम करता है।

खाल के लिए जगुआर का शिकार आधिकारिक तौर पर 1970 के दशक तक गैरकानूनी नहीं था, जब जगुआर और उनके अंगों के शिकार और बिक्री पर प्रतिबंध लगाने वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा उपाय लागू किए गए। तब से, जगुआर के अंगों, विशेष रूप से जगुआर की खाल की अंतर्राष्ट्रीय मांग में काफी कमी आई है। हालाँकि, जगुआर के शरीर के अंगों के लिए अवैध घरेलू बाजार बने हुए हैं, जो इस प्रजाति के लिए काफी खतरा पैदा कर रहे हैं।

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ क्या कर रहा है?

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ स्थानीय समुदायों, रेंज राज्य सरकारों और विभिन्न भागीदारों के साथ मिलकर जगुआर को विलुप्त होने से बचाने के लिए काम करता है। 2020 में, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ ने 2030 तक जगुआर की आबादी, शिकार के आधार, आवास और कनेक्टिविटी को बढ़ाने या स्थिर करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ अपनी क्षेत्रीय जगुआर रणनीति शुरू की। रणनीति में 15 डब्ल्यूडब्ल्यूएफ जगुआर प्राथमिकता परिदृश्यों को परिभाषित किया गया है, जहाँ इसका उद्देश्य जगुआर के गढ़ों को सुरक्षित करना, कनेक्टिविटी बनाना, जगुआर की हत्या को रोकना, सहयोग को उत्प्रेरित करना और स्थायी वित्तपोषण और राजनीतिक इच्छाशक्ति जैसी सक्षम स्थितियाँ बनाना है।

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ ये कर रहा है:

1. स्थानीय परिदृश्य स्तर पर जगुआर निगरानी का संचालन करके, उत्पादक परिदृश्यों में सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देकर, मानव-जगुआर संघर्ष का प्रबंधन करके, जगुआर हत्याओं को कम करके, और संरक्षित क्षेत्रों में बेहतर प्रबंधन में योगदान
2. राष्ट्रीय स्तर पर जनता को शामिल करके और विभिन्न क्षेत्रों में जगुआर संरक्षण को मुख्यधारा में लाना।
3. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जगुआर संरक्षण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए दीर्घकालिक और बड़े पैमाने पर वित्त को बढ़ावा देना। ■

• बालमेला 2024 •

स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट और नेचर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ बालमेला, 25 स्कूलों के सैकड़ों बच्चों ने लिया हिस्सा

बालमेला 2024 में सैकड़ों बच्चों ने सीखे मानसिक-शारीरिक रूप से फिट रहने के गुर

जमशेदपुर। स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट और नेचर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में यहां के सिदगोड़ा स्थित चिल्ड्रेन पार्क में 20 नवंबर को एक दिवसीय बाल मेला संपन्न हो गया। इस मेले में 25 से ज्यादा स्कूलों के सैकड़ों बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और शारीरिक-मानसिक रुप से फिट रहने के गुर सीखे।

कार्यक्रम की शुरुआत जमशेदपुर पूर्वी के विधायक और जमशेदपुर पश्चिमी विधानसभा से एनडीए के उम्मीदवार सरयू राय ने ध्वजारोहण करके की। आगंतुकों का स्वागत स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के ट्रस्टी अशोक गोयल ने किया।

पूर्व ओलंपियन भूपिंदर सिंह ने ऐसे आयोजनों को सराहा और कहा कि खिलाड़ियों को लगातार मेहनत करने की जरूरत है। उन्हें बढ़िया प्लेटफार्म मिला है। इसलिए वो प्रैक्टिस पर फोकस करें। रोज प्रैक्टिस करें।

89 साल के एनसी देव ने कहा कि जब 1959 में मैंने भारत का प्रतिनिधित्व किया था, तब उम्मीद नहीं थी कि भारत में खेल और खिलाड़ियों का भविष्य इतना उन्नत होगा। आज जब छोटे-छोटे बच्चों को अपने सामने देख रहा रहा हूं तो मुझे मेरा बचपन याद आ रहा है। उन्होंने सभी बच्चों से निरंतर प्रैक्टिस करते रहने की अपील की।

लायंस क्लब जमशेदपुर की चेयरपर्सन पूर्वी घोष ने कहा कि बच्चों के लिए पढ़ाई तो जरूरी है ही, उनका मानसिक और शारीरिक विकास तभी हो सकेगा, जब वे खेल पर फोकस करेंगे। उन्होंने श्री सरयू राय को इस तरह के आयोजन के लिए बधाई दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरयू राय ने कहा कि इस साल चूंकि चुनाव आचार संहित लागू है, इसलिए एक दिन का ही बाल मेला आयोजित हो सका। उन्होंने यह भी कहा कि इतने कम समय में एक आयोजन की तैयारी करना कठिन कार्य था, लेकिन नौजवानों ने इसे सही तरीके से अंजाम दिया। उन सभी को बधाई।

सरयू राय ने कहा कि बाल मेला का आयोजन

इसलिए किया गया है ताकि बच्चों को खेल की गतिविधियों के साथ-साथ उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में भी बताया जा सके। इस तरह के मेलों में उन्हें बताया जाता है कि वे अगर मानसिक और शारीरिक रुप से फिट रहेंगे तो आने वाली चुनौतियों का मुस्तैदी से सामना कर सकेंगे।

बाल मेला को सफल बनाने में स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के ट्रस्टी आशुतोष राय, सरयू राय के निजी सचिव सुधीर सिंह, रिकेंदु रंजन केशरी, अशोक कुमार, राजेश सिन्हा, आदित्य मुखर्जी, विनीत, सन्नी सिंह, आदि ने महती भूमिका निभाई। मंच संचालन वरिष्ठ खेल प्रशिक्षक श्याम कुमार शर्मा ने किया। ■

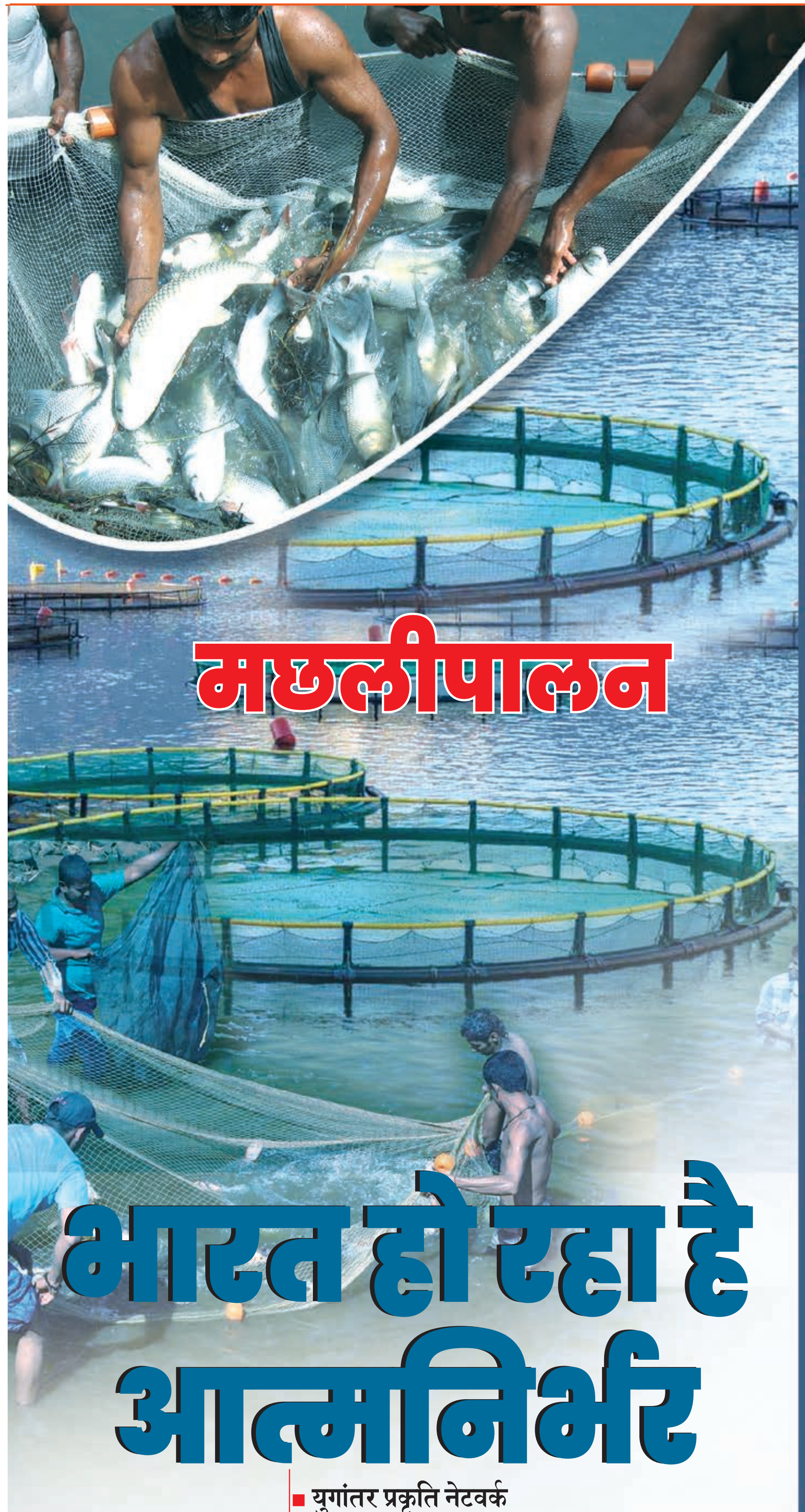

मछलीपालन

भारत हो रहा है आत्मनिर्भर

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

विश्व मत्स्य पालन दिवस (डब्ल्यूएफडी) हर वर्ष 21 नवंबर को मनाया जाता है। इसे विश्व भर के सभी मछुआरों, मछलीपालकों और संबंधित हितधारकों के साथ एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वर्ष 1997 में हुई थी जब नई दिल्ली में विश्व मत्स्यपालक एवं मत्स्यकर्मी मंच की बैठक हुई थी। इसमें 18 देशों के प्रतिनिधियों के साथ विश्व मत्स्यपालन मंच का गठन हुआ और टिकाऊ मत्स्यपालन प्रथाओं और नीतियों के वैश्विक अधिदेश की वकालत करने वाले एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसका उद्देश्य समुद्री और अंतर्देशीय संसाधनों की स्थिरता के लिए अत्यधिक मछली पकड़ने, आवास विनाश और अन्य गंभीर खतरों की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

दरअसल, मछली पकड़ना समुद्री, तटीय और अंतर्देशीय क्षेत्रों में जलीय जीवों को पकड़ना है। समुद्री और अंतर्देशीय मत्स्य पालन, जलीय कृषि के साथ मिलकर, दुनिया भर में लगभग 820 मिलियन लोगों को भोजन, पोषण और आय का स्रोत प्रदान करते हैं, जिसमें कटाई, प्रसंस्करण, विपणन और वितरण शामिल हैं। कई लोगों के लिए यह उनकी पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान का भी हिस्सा है। वैश्विक मत्स्य संसाधनों की स्थिरता के लिए सबसे बड़ा खतरा अवैध, अप्रतिबंधित और अनियमित मत्स्य पालन है।

2019-20 में, 142 लाख टन के कुल उत्पादन के साथ, भारत ने वैश्विक हिस्सेदारी का 8% उत्पादन किया। इसी अवधि के दौरान, भारत का मत्स्य निर्यात 46,662 करोड़ रुपये रहा, जो भारत के कृषि निर्यात का लगभग 18% था। 2024 में, वैश्विक स्तर पर पहली बार जलीय कृषि उत्पादन पारंपरिक मत्स्य पालन से आगे निकल गया है। शीर्ष 10 देशों जिनमें चीन, इंडोनेशिया, भारत, वियतनाम, बांग्लादेश, फिलीपींस, दक्षिण कोरिया, नॉर्वे, मिस्र और चिली शामिल हैं, इनका जलीय कृषि उत्पादन में लगभग 90 फीसदी योगदान है। जलीय कृषि का अर्थ मछली, मोलस्क, क्रस्टेशियंस और जलीय पौधों सहित जलीय जीवों की खेती से है। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की रिपोर्ट 'द स्टेट ऑफ वर्ल्ड फिशरीज एंड एक्वाकल्चर 2024' में कहा कि 2022 में जलीय कृषि उत्पादन 13.09 करोड़ टन तक पहुंच गया, जिसमें 9.44 करोड़ टन जलीय जीव थे जो कुल जलीय पशु उत्पादन का 51 फीसदी के बराबर है। जलीय कृषि उत्पादन में वृद्धि के कारण मोलस्क और क्रस्टेशियन की हिस्सेदारी में भी वृद्धि हुई है। साल 2022 में पकड़ी गई 75 प्रतिशत फिनफिश में से आधी समुद्री प्रजातियां थीं, जबकि 44 फीसदी मीठे या ताजे पानी की प्रजातियां थीं। समुद्री फिनफिश भी उत्पादित कुल जलीय जीवों का 38 फीसदी हिस्सा थीं और उसके बाद मीठे पानी की मछलियां 33 फीसदी थीं। रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में मछलियों की खपत तेजी से बढ़ रही है। 1961 और 2016 के बीच 3.2 फीसदी की वृद्धि दर्ज की है। जबकि इस दौरान जनसंख्या 1.6 फीसदी की रफ्तार से बढ़ी है। रिपोर्ट के अनुसार, 2015 में विश्व स्तर पर जानवरों से मिलने वाले प्रोटीन में मछलियों की हिस्सेदारी 17 फीसदी रही। हालांकि यह सभी देशों के लिए एक बराबर नहीं। दुनिया में इनकी प्रति व्यक्ति वार्षिक खपत 1961 में 9.1 किलोग्राम थी, जो 2022 तक बढ़कर 20.7 किलोग्राम हो गई। एफएओ के सहायक महानिदेशक मैनुअल बारंगे कहते हैं कि जलीय कृषि दुनिया भर में बढ़ती जनसंख्या को भोजन उपलब्ध कराने की क्षमता रखती है। यह पिछले पांच दशकों में दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली खाद्य उत्पादन प्रणाली रही है। जलीय कृषि उत्पादन को यूरोपीय ग्रीन डील द्वारा भोजन और चारे के लिए 'कम कार्बन' प्रोटीन के स्रोत के रूप में भी मान्यता दी गई है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के मुताबिक, दुनियाभर के एक तिहाई सागरों में जरूरत से ज्यादा मछलियां पकड़ी जा रही हैं और इसकी वजह मछलियों की रिकॉर्ड खपत है। सबसे ज्यादा खपत करने वाले देश चीन, म्यांमार, वियतनाम और जापान हैं।

आपको बता दें कि भारत का लक्ष्य 2024-25 तक 22 मिलियन मीट्रिक टन मछली उत्पादन का लक्ष्य हासिल करना है। पिछले कुछ वर्षों में मत्स्य पालन क्षेत्र में तीन बड़े परिवर्तन हुए हैंः अंतर्देशीय जलकृषि, विशेष रूप से मीठे जल की जलकृषि का विकास, कैप्चर मत्स्य पालन का मशीनीकरण और खारे पानी में झींगा जलकृषि की सफल शुरुआत। पिछले वर्ष की तुलना में 2021-22 में मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए बजट में 34% की वृद्धि की गई है।

भारत के लिए मत्स्य पालन का महत्व

भारत विश्व में जलकृषि के माध्यम से मछली उत्पादन करने वाला दूसरा प्रमुख देश है। भारत विश्व में मछली का चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है, क्योंकि वैश्विक मछली उत्पादन में इसका योगदान 7.7% है। वर्तमान में यह क्षेत्र देश में 2.8 करोड़ से अधिक लोगों को आजीविका प्रदान करता है। फिर भी, यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी क्षमता का अभी तक दोहन नहीं हुआ है। भारत के आर्थिक सर्वेक्षण, 2019-20 में अनुमान लगाया गया है कि देश की अंतर्देशीय क्षमता का केवल 58% ही अब तक उपयोग किया जा सका है। बुनियादी ढांचे से संबंधित चुनौतियों के बावजूद, पिछले छह वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा किए गए उपायों से यह सुनिश्चित हुआ कि मत्स्य पालन क्षेत्र 10% से अधिक की वार्षिक वृद्धि दर दर्ज करता रहे।

मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ

खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने बताया है कि वैश्विक समुद्री मछली भंडार का लगभग 90% या तो पूर्ण रूप से दोहन हो चुका है या अत्यधिक मछली पकड़ी जा चुकी है या इतनी कम हो चुकी है कि जैविक रूप से पुनः प्राप्ति संभव नहीं है। प्लास्टिक और अन्य अपशिष्ट जैसे हानिकारक पदार्थों को जल निकायों में छोड़ने से जलीय जीवन पर विनाशकारी परिणाम होते हैं।

मत्स्य पालन में सुधार के लिए सरकार का प्रयास के तहत आर्थिक गतिविधि के केन्द्र के रूप में पांच प्रमुख मछली पकड़ने वाले बंदरगाहों (कोच्चि, चेन्नई, विशाखापत्तनम, पारादीप, पेटुआघाट) का विकास किया गया गया है। इसके अलावा तमिलनाडु में बहुउद्देशीय समुद्री शैवाल पार्क हब और स्पोक मॉडल पर विकसित, गुणवत्तायुक्त समुद्री शैवाल आधारित उत्पादों के उत्पादन का केंद्र बनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री मत्स्य योजना के तहत 15 लाख मछुआरों, मछली पालकों आदि के लिए प्रत्यक्ष रोजगार तथा इससे लगभग तीन गुना अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित करना है। इसका लक्ष्य 2024 के आखिरी तक मछुआरों, मत्स्यपालकों और मत्स्य श्रमिकों की आय को दोगुना करना भी है। पाक जलडमरूमध्य से गहरे समुद्र में मछली पकड़ने वाली नौकाओं में ट्रॉल मछली पकड़ने वाली नौकाओं का विविधीकरण 2017 में एक केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरू की गई थी। इसे अम्ब्रेला ब्लू रिवोल्यूशन स्कीम के हिस्से के रूप में लॉन्च किया गया था। ■

भारत की वो मछलियां, जिन्हें हम पालते-खाते हैं

1. हिलसा
2. रोहू
3. कतला
4. मछुआ
5. साहस
6. कातले
7. चिंगड़ा
8. सूरमाई
9. पोम्फ्रेट
10. केला माछी
11. गंडी माछी
12. बेलफूल
13. तांबड़ा सोल
14. जिंगा
15. सिंगाड़ा
16. रंगा
17. बेक्टी
18. ट्राउट
19. सैलफिश
20. गरूड़ा
21. बोंगा
22. गोबिंदो
23. दानिया
24. सल्टवाटर क्रॉपी
25. ब्लैक बास
26. चंदेला
27. गैंगा
28. लाटू
29. कछुआ माछी
30. बंगड़ा
31. गोमटी वेंगा
32. सोरत माछी
33. डॉल्फिन फिश
34. रेड स्नेपर
35. अन्गारा
36. स्कैम्प्स
37. फ्लैट फिश
38. जयपुर सोल
39. गैर बटख
40. बारामूला
41. तिलापिया

बेहद खूबसूरत है बास्किंग शार्क

बास्किंग शार्क ब्रिटेन की सबसे बड़ी मछली है। इसकी लंबाई लगभग एक डबल-डेकर बस जितनी होती है। अपने आकार के बावजूद, यह शार्क छोटे शिकार को खाती है, जो अपने गलफड़ों के ज़रिए प्रति घंटे लगभग दो मिलियन लीटर पानी छानती है।

■ एडी जॉनस्टन

बास्किंग शार्क का शरीर बड़ा, हल्के भूरे रंग का होता है, जो ऊपर की तरफ गहरा होता है और नीचे की तरफ हल्का हो जाता है। इसकी पीठ पर एक बड़ा काला, त्रिकोणीय पृष्ठीय पंख होता है। शार्क का चौड़ा जबड़ा अंदर से सफ़ेद होता है और उसमें काले गिल रेकर होते हैं। मुँह में बहुत छोटे-छोटे दाँतों की कई पंक्तियाँ होती हैं। बास्किंग शार्क खास तौर पर ज़ूप्लैंकटन नामक सूक्ष्म जीवों को खाती है, जिन्हें यह अपना मुंह खोलकर और अपने बढ़े हुए गिल स्लिट से पानी को बहने देकर पकड़ती है। पानी में मौजूद ज़ूप्लैंकटन फिर बलगम से ढके गिल रेकर में फंस जाते हैं। एक बास्किंग शार्क के खुले मुंह का दृश्य जिसमें काले गिल रेकर्स दिखाई दे रहे हैं जो तैरते समय पानी से छोटे जानवरों को छानते हैं।

मई से अक्टूबर के बीच ब्रिटिश तटीय जल में बास्किंग शार्क पाई जाती हैं। सर्दियों के महीनों के दौरान वे उत्तरी अफ्रीका तक दक्षिण की ओर पलायन करती हैं, हालांकि कुछ जानवर ब्रिटिश और आयरिश जल में रहते हैं और ट्रान्साटलांटिक प्रवास के कुछ सबूत भी हैं।

वे पूरे ब्रिटेन के तटीय जल में तैरते हैं, लेकिन कॉर्नवाल, पश्चिमी स्कॉटलैंड, आइल ऑफ मैन और पश्चिमी इंग्लिश चैनल के आसपास ज़्यादा देखे जाते हैं। वे खुले समुद्र में, सर्फ़ ज़ोन में और कभी-कभी खारे पानी में भी पाए जा सकते हैं।

क्या है बास्किंग शार्क की जीवन शैली

शार्क गर्मियों के महीनों में समुद्र की सतह पर बहुत समय बिताती है। धीरे-धीरे चलती हैं। इस व्यवहार के कारण उन्हें 'बास्किंग शार्क' नाम मिला क्योंकि वे सूर्य की गर्मी को सोखती हुई दिखाई देती हैं। बास्किंग शार्क आमतौर पर एकान्त में रहती हैं, लेकिन कभी-कभी वे एक ही लिंग के झुंड में तैरती हैं, जिनमें आम तौर पर कुछ से अधिक व्यक्ति नहीं होते हैं। बास्किंग शार्क की संभोग आदतें काफी हद तक अज्ञात हैं। हालांकि यह अंडे देने वाली प्रजाति के रूप में पुष्टि की गई है। माना जाता है कि शार्क गर्मियों की शुरुआत में संभोग करती हैं और उनकी गर्भधारण अवधि 12 से 36 महीने होती है। माना जाता है कि वे शावकों के बीच एक ब्रेक लेती हैं। प्रजनन की धीमी दर के कारण वे तेजी से प्रजनन करने वाली प्रजातियों की तुलना में विलुप्त होने के प्रति अधिक संवेदनशील हैं।

गर्मियों के महीनों में लगभग सभी ब्रिटिश तटीय जल में बास्किंग शार्क पाई जा सकती हैं। दक्षिण-पश्चिम इंग्लैंड, वेल्स और स्कॉटलैंड के पश्चिमी तट के आसपास अधिक बार देखे जाने की सूचना है। उनके हॉटस्पॉट स्कॉटिश हेब्राइड्स में आइल ऑफ स्काई और आइल ऑफ मॉल, और आइल ऑफ मैन, डेवोन और कॉर्नवाल हैं। बास्किंग शार्क को पानी में धीरे-धीरे चलने वाले बड़े, काले, त्रिकोणीय पृष्ठीय पंख से पहचाना जा सकता है। इसे देखने का सबसे अच्छा मौका आपको धूप वाले दिन मिलेगा, जब शार्क के भोजन का स्रोत ज़ूप्लैंकटन सतह पर सबसे अधिक मात्रा में होगा। जब वे पानी में भोजन करते हुए आगे बढ़ते हैं, तो वे अक्सर अपने शरीर को घुमाते हैं, कभी-कभी पूरे 360 डिग्री तक घूम जाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, अगर आप बास्किंग शार्क के साथ तैर रहे हैं तो कम से कम चार मीटर की दूरी बनाए रखें और अगर आप वाहन में हैं तो 100 मीटर की दूरी बनाए रखें।

वैश्विक स्तर पर, बास्किंग शार्क की संख्या घट रही है और इस प्रजाति को लुप्तप्राय माना जाता है। हालाँकि बास्किंग शार्क को पूर्वोत्तर अटलांटिक में भी लुप्तप्राय माना जाता है, लेकिन नवीनतम आकलन में पाया गया है कि यहाँ आबादी स्थिर है।

अतीत में, बास्किंग शार्क को मुख्य रूप से उनके लिवर ऑयल के लिए पकड़ा जाता था, लेकिन उनकी त्वचा, मांस और पंखों के लिए भी उनका शिकार करने की बात सामने आई है। 1995 तक ब्रिटेन के आसपास शार्क का शिकार किया जाता था। इस प्रजाति के मछली पकड़ने पर ब्रिटिश जलक्षेत्र में 1998 से तथा यूरोपीय संघ के जलक्षेत्र में तथा विश्व भर में यूरोपीय संघ द्वारा पंजीकृत जहाजों द्वारा 2007 से प्रतिबंध लगा दिया गया है। वैज्ञानिकों को इस बात की चिंता है कि माइक्रोप्लास्टिक शार्क के लिए खतरा बन सकता है। उनके गिल रेकर्स के माध्यम से छोटे प्लास्टिक कणों को छानने और संभावित अंतर्ग्रहण के प्रभाव के बारे में अभी तक पता नहीं चला है। जलवायु परिवर्तन एक और संभावित खतरा है, क्योंकि यह उनके शिकार के वितरण को प्रभावित करता पाया गया है।

बेसिंग शार्क के शरीर का आकार एक महान सफेद शार्क के समान होता है और दोनों प्रजातियां काफी समान हैं। एक बेसिंग शार्क को उसके बड़े जबड़े, छोटी आंखों, लंबे गिल स्लिट्स जो शार्क के सिर के चारों ओर लगभग पूरी तरह से लपेटे होते हैं, और बड़े लेकिन पतले शरीर के आकार से एक सफेद से आसानी से अलग कर सकते हैं। बेसिंग शार्क 40 फीट से अधिक लंबी हो सकती हैं और पूरी तरह से विकसित होने पर उनका वजन पांच टन से अधिक हो सकता है।

आहार एवं आवास

बेसिंग शार्क फ़िल्टर फीडर हैं। उनका आहार मुख्य रूप से प्लवक से बना होता है, जो समुद्र के सबसे छोटे जीवों में से कुछ हैं। खाने के लिए वे अपने मुंह को चौड़ा करके तैरते हैं और पानी को गुजरने देते हैं। यह निष्क्रिय रणनीति मेगामाउथ और व्हेल शार्क से अलग है जो सांस लेने और खाने के लिए सक्रिय रूप से अपने गलफड़ों के माध्यम से पानी पंप करते हैं। भोजन करते समय, बेसिंग शार्क प्रति घंटे 2,000 टन पानी को फ़िल्टर कर सकती है, जो लगभग उतना ही है जितना एक ओलंपिक आकार का स्विमिंग पूल पकड़ सकता है। जीवित रहने के लिए, बेसिंग शार्क को प्रति दिन लाखों व्यक्तिगत प्लवक खाने की ज़रूरत होती है, जिसका वजन कई सौ पाउंड हो सकता है। बास्किंग शार्क सौम्य और आम तौर पर एकान्तप्रिय होते हैं। कभी-कभी इन्हें छोटे समूहों में देखा जा सकता है, खास कर तब जब गर्मियों के शुरुआती महीनों में संभोग के मौसम के दौरान जब पानी गर्म होता है और भोजन प्रचुर मात्रा में होता है। वे आंतरिक निषेचन के माध्यम से प्रजनन करते हैं और मादाएं अपने गर्भाशय में अंडे सेती हैं। अंडे आंतरिक रूप से फूटते हैं और जीवित पैदा होते हैं, जिसे ओवोविविपेरस प्रजनन के रूप में जाना जाता है। गर्भधारण तीन साल तक रहता है, जो किसी भी कशेरुकी की सबसे लंबी गर्भावस्था है, हालांकि यह समुद्र के विभिन्न क्षेत्रों में आबादी के बीच भिन्न हो सकता है। व्हेल शार्क के विपरीत, उनके बड़े चचेरे भाई, बेसिंग शार्क केवल कुछ, बड़े बच्चों को जन्म देते हैं। वास्तव में, वैज्ञानिकों का मानना है कि वे सभी मछलियों में सबसे बड़े बच्चों को जन्म देते हैं, जिसमें महान सफेद शार्क भी शामिल है।

कुछ अहम तथ्य

वैज्ञानिक नाम	सेटोरहिनस मैक्सिमस
लंबाई	12 मीटर तक
वजन	छह टन तक
औसत जीवनकाल	लगभग 50 वर्ष
यूके में स्थिति	मूल निवासी, मौसमी आगंतुक
यूके संरक्षण स्थिति	संरक्षित
आईयूसीएन में रेड लिस्ट श्रेणी	संकटग्रस्त

खतरा और संरक्षण

सन 1900 की शुरुआत में बास्किंग शार्क पूर्वी और पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में मत्स्य पालन के लिए एक लोकप्रिय लक्ष्य था। उनके तेल, विटामिन से भरपूर जिगर, मांस और पंख उन्हें एक वांछनीय लक्ष्य बनाते थे और उनकी धीमी चाल उन्हें एक आसान लक्ष्य बनाती थी। कनाडा में, एक आधिकारिक उन्मूलन कार्यक्रम बास्किंग शार्क के शिकार पर केंद्रित था क्योंकि वे मछली पकड़ने के गियर को नष्ट कर रहे थे और वाणिज्यिक मछली पकड़ने की गतिविधियों में हस्तक्षेप कर रहे थे। आज, बेसिंग शार्क की अधिकांश मछलियाँ पकड़ना बंद हो गया है, लेकिन वे अभी भी मछली पकड़ने के उपकरण में आकस्मिक बायकैच और आहार पूरक में उपयोग के लिए क्रिल और अन्य प्लवक प्रजातियों के वाणिज्यिक लक्ष्यीकरण के कारण शिकार की कमी से खतरे में हैं। वैज्ञानिक अभी भी बेसिंग शार्क और जलवायु परिवर्तन, गर्म होते पानी और महासागर के अम्लीकरण के उन पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में सीख रहे हैं। प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ उन्हें अपनी पूरी सीमा में असुरक्षित और पूर्वोत्तर अटलांटिक महासागर और उत्तरी प्रशांत महासागर क्षेत्रों में लुप्तप्राय के रूप में सूचीबद्ध करता है। ■

श्रीलंका को चाहिए भारतीय बाइसन

हाल ही में श्रीलंका ने भारत से छह भारतीय बाइसन को स्थानांतरित करने का अनुरोध किया ताकि उन्हें उस द्वीप पर फिर से लाया जा सके, जहाँ वे 17 वीं शताब्दी के अंत तक गायब हो गए थे। अगर इस परियोजना को मंजूरी मिल जाती है तो यह भारत और श्रीलंका के बीच इस तरह का पहला समझौता होगा।

फोटोः *कुमार आशुतोष, फील्ड डायरेक्टर, पीटीआर*

भारतीय बाइसन या गौर (बोस गौरस) भारत में पाए जाने वाले जंगली मवेशियों की सबसे बड़ी प्रजाति है और यह सबसे बड़ा मौजूदा बोवाइन (गोजातीय) जीव है। दुनिया में गौर की संख्या लगभग 13,000 से 30,000 है, जिनमें से लगभग 85% भारत में मौजूद हैं। फरवरी 2023 में आयोजित प्रजातियों के लिये पहली बार जनसंख्या आकलन अभ्यास के परिणामों के अनुसार लगभग 2,000 भारतीय गौरों का नीलगिरी वन प्रभाग में होने का आकलन किया गया था। यह मूलतः दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में पाया जाता है। भारत में वे पश्चिमी घाट में बहुत अधिक पाए जाते हैं। वे मुख्य रूप से नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान, बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, मासीनागुड़ी राष्ट्रीय उद्यान और बिलिगिरिरंगना हिल्स (बीआर हिल्स) में पाए जाते हैं। ये पलामू टाइगर रिजर्व, झारखंड में भी पाये जाते हैं। इनकी मजबूत उपस्थिति म्यांमार और थाईलैंड में भी है।

भारतीय बाइसन के बारे में तथ्य

वैज्ञानिक नाम	बोस गौरस
प्रजातियाँ	बी. गौरस
आहार	शाकाहारी
जीवन शैली	झुंड
आयु	26 वर्ष
शिकारियों	विशाल आकार के कारण उनके दुश्मन कम हैं। हालाँकि, तेंदुए, ढोल, मगरमच्छ बिना सुरक्षा वाले मवेशियों पर हमला कर सकते हैं और एक पूर्ण विकसित वयस्क को भी मार सकते हैं।
शीर्ष गति	56 किमी/घंटा
स्थिति	संकटग्रस्त

भारतीय बाइसन सदाबहार वन और आर्द्र पर्णपाती वन में रहते हैं। हालाँकि वे शुष्क पर्णपाती जंगलों में भी जीवित रह सकते हैं। वे 6,000 फीट से अधिक ऊँचाई वाले हिमालय में नहीं पाए जाते हैं। वे आम तौर पर केवल तलहटी में रहते हैं। भारतीय बाइसन एक चरने वाला जानवर है और आम तौर पर सुबह जल्दी एवं देर शाम को भोजन करता है।

खतरे

भोजन की कमीः घास के मैदानों के विनाश, व्यावसायिक रूप से महत्त्वपूर्ण पौधों का वृक्षारोपण, आक्रामक पौधों की प्रजातियों और घरेलू पशुओं के अंधाधुंध चरने के कारण खाद्य संकट की स्थित उत्पन्न हो गई है।

अवैध शिकारः उनके व्यावसायिक मूल्य के साथ-साथ गौर मांस की उच्च मांग के कारण अवैध शिकार किया जाता है।

• भारतीय बाइसन •

पर्यावास हानिः वनों की कटाई और व्यावसायिक वृक्षारोपण के कारण पर्यावास की हानि होती है जिसका सीधा असर बाइसन पर पड़ता है।

मानव-पशु संघर्षः मानव बस्तियों के निकट रहने के कारण बाइसन और मनुष्यों के बाच में संघर्ष आम है। हानि बाइसन की ही होती है।

भारत के लिए गर्व

भारत को गौर नामक भारतीय बाइसन का एकमात्र घर होने पर गर्व है जो जंगली मवेशियों के परिवार में सबसे बड़ा और सबसे लंबा है। यहाँ तक कि यह भैंस और बाइसन से भी बड़ा है। 1986 से आइयूसीएन ने घटती आबादी के कारण भारतीय बाइसन को संकटग्रस्त के रूप में सूचीबद्ध किया है। आजकल, इस जानवर को भारत के कुछ प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों जैसे नागरहोल, बांदीपुर, काबिनी, मसिनागुडी, पीआरटी और बीआर हिल्स में अच्छी तरह से संरक्षित रखा जाता है। ये राष्ट्रीय उद्यान पर्यटकों को भारतीय बाइसन के अच्छे दृश्य प्रदान करते हैं क्योंकि यह जानवर भारतीय हाथी की तुलना में अधिक डरपोक होता है और टकराव से बचता है।

शारीरिक विशेषताएँ

भारतीय बाइसन एक विशालकाय और बहुत मजबूत जानवर है। उनके माथे पर एक उत्तल आकृति होती है। अंग बहुत मजबूत और सुदृढ़ होते हैं। वयस्क नर का वजन लगभग 600 किलोग्राम से 1500 किलोग्राम होता है। वयस्क मादा का वजन लगभग 400 किलोग्राम से 1000 किलोग्राम होता है। भारतीय बाइसन की लंबाई लगभग 240 सेमी से 340 सेमी और पूंछ की लंबाई लगभग 70 सेमी से 105 सेमी होती है। उनकी ऊंचाई लगभग 170 सेमी से 230 सेमी होती है। उनकी पीठ के साथ एक प्रमुख रिज होती है। पीठ पर बहुत कम बाल होते हैं। उनकी पूंछ आमतौर पर छोटी होती है, जो बैल से भी छोटी होती है। नर और मादा दोनों के सींग होते हैं। सींग हल्के हरे या पीले भूरे रंग के होते हैं और ऊपर की ओर नुकीले नहीं होते बल्कि थोड़े अंदर की ओर मुड़े होते हैं। आँखें भूरे रंग की होती हैं। नवजात बाइसन का रंग हल्का सुनहरा पीला होता है जो बाद में हल्के भूरे और फिर लाल भूरे रंग में बदल जाता है। माथा क्रीम जैसा सफेद या पीले रंग का होता है।

आदत : बाइसन एक सामाजिक जानवर है। वे आम तौर पर 30 से 40 के समूह में रहते हैं। उनके पास एक अलार्म कॉल भी है जो एक ऊंची आवाज़ में सूँघने के बाद एक गुर्राहट वाली आवाज़ होती है। आवास और आहारः भारतीय बाइसन पश्चिमी घाट में बहुत अधिक पाए जाते हैं। वे सदाबहार वन और नम पर्णपाती वनों को पसंद करते हैं। हालाँकि, वे शुष्क पर्णपाती वनों में भी जीवित रह सकते हैं। वे हिमालय में 6,000 फीट से अधिक ऊँचाई पर नहीं पाए जाते हैं। वे आम तौर पर केवल तलहटी में ही रहते हैं। वे उन मैदानों की ओर आकर्षित होते हैं जो लवण और खनिजों से भरपूर होते हैं।

भारतीय बाइसन एक चरने वाला जानवर है और इसे पत्ते, फल, तने, फूल और बीज चबाना बहुत पसंद है। वे आम तौर पर सुबह जल्दी और देर शाम को भोजन करते हैं। हाथी सेब, भारतीय बॉक्सवुड, ईस्ट इंडियन स्क्रू ट्री, गोल्डन शावर ट्री, काजू के पौधे गौर के कुछ पसंदीदा खाद्य पदार्थ हैं। कभी-कभी भोजन की कमी के दौरान वे पेड़ों की छाल उतारकर अपने पोषण और खनिजों को पूरा करते हैं। वे सागौन की छाल खोदते हैं जिसमें कैल्शियम और पोटेशियम की मात्रा अधिक होती है।

खतरा

भोजन की कमीः घास के मैदानों में विनाश के कारण इन जानवरों के लिए भोजन की उपलब्धता में कमी आई है। व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण पेड़ों के रोपण के कारण, हरे-भरे घास के मैदान कम हो गए हैं जो इन जंगली मवेशियों के लिए चारे का मुख्य स्रोत हैं। इसके अलावा, जिन क्षेत्रों में गौर रहते हैं, वहां पालतू जानवरों की अंधाधुंध चराई के कारण जंगली मवेशियों को अपने भोजन के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

अवैध शिकारः भारतीय बाइसन का अवैध शिकार उनके वाणिज्यिक मूल्य के साथ-साथ नेपाल-भारत सीमा के अवैध बाजार में गौर मांस की उच्च मांग के कारण किया जाता है।

संरक्षण अधिनियमः भारतीय बाइसन को आईयूसीएन सूची के अनुसार असुरक्षित माना जाता है। इसलिए, भारत सरकार ने पहले ही वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची में जंगली बाइसन के संरक्षण को शामिल कर लिया है। अधिनियम में क्षेत्र में आक्रामक पौधों को हटाने और देशी पौधों को फिर से लगाने का आह्वान किया गया है। इसमें उन क्षेत्रों के आसपास मवेशियों के अंधाधुंध चरने पर उचित विनियमन की भी बात कही गई है जहाँ गौर रहते हैं। ■

■ प्राजेश जेना

पीटीआर में गौर संरक्षण के लिए उठाए जा रहे हैं जरूरी कदम

गौर (बोस गौरस), जिसे भारतीय बाइसन भी कहते हैं, सबसे बड़ी जंगली मवेशी प्रजाति के रुप में भारत की वन्यजीव विरासत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह पश्चिमी घाट, मध्य भारत, पूर्वोत्तर राज्यों और हिमालय की तलहटी के कुछ हिस्सों के जंगली इलाकों में पाया जाता है। विश्व स्तर पर इसकी सीमा नेपाल, भूटान, म्यांमार और दक्षिण पूर्व एशिया तक फैली हुई है। अपनी मजबूत संरचना के बावजूद, गौर को निवास स्थान के विनाश, अवैध शिकार और पशुधन से होने वाली बीमारियों जैसे महत्वपूर्ण खतरों का सामना करना पड़ता है। यही वजह है कि इसे इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (IUCN) ने लाल सूची में कमजोर के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

झारखंड में गौर की आबादी गंभीर रूप से कम है। दरअसल, यह सिर्फ पलामू टाइगर रिजर्व (पीटीआर) जैसे संरक्षित क्षेत्रों तक ही सीमित है। शिकार और आवास विखंडन जैसे ऐतिहासिक कारकों ने इसके पतन में योगदान दिया है। वर्तमान में, पीटीआर में गौर दर्शन मुख्य रूप से बेतला और छुपादोहर पर्वतमाला में केंद्रित हैं। पलामू टाइगर रिजर्व ने गौर की निगरानी और सुरक्षा के लिए कई कदम उठाए हैं। उनकी जनसंख्या पर नज़र रखने के लिए नियमित अनुमान सर्वेक्षण आयोजित किए जाते हैं। घास के मैदानों को बहाल करने, जलस्रोतों को बढ़ाने और अवैध शिकार विरोधी उपायों को मजबूत करने के प्रयास जारी हैं। सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रमों का उद्देश्य मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करना और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना भी है।

झारखंड में गौर के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए आवास सुधार जारी रखना, आबादी की निगरानी करना और वन्यजीव गलियारे स्थापित करना आवश्यक है। बारेसनर रेंज में गौर गतिविधियों की खोज आशा प्रदान करती है और इस प्रतिष्ठित प्रजाति के लिए एक महत्वपूर्ण गढ़ के रूप में पीटीआर के महत्व को रेखांकित करती है। निरंतर संरक्षण प्रयासों के माध्यम से हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि गौर झारखंड की समृद्ध जैव विविधता का प्रतीक बना रहे। ■

(**श्री प्राजेश जेना** भारतीय वन सेवा के अधिकारी और संप्रति पीटीआर में डिप्टी डायरेक्टर हैं।)

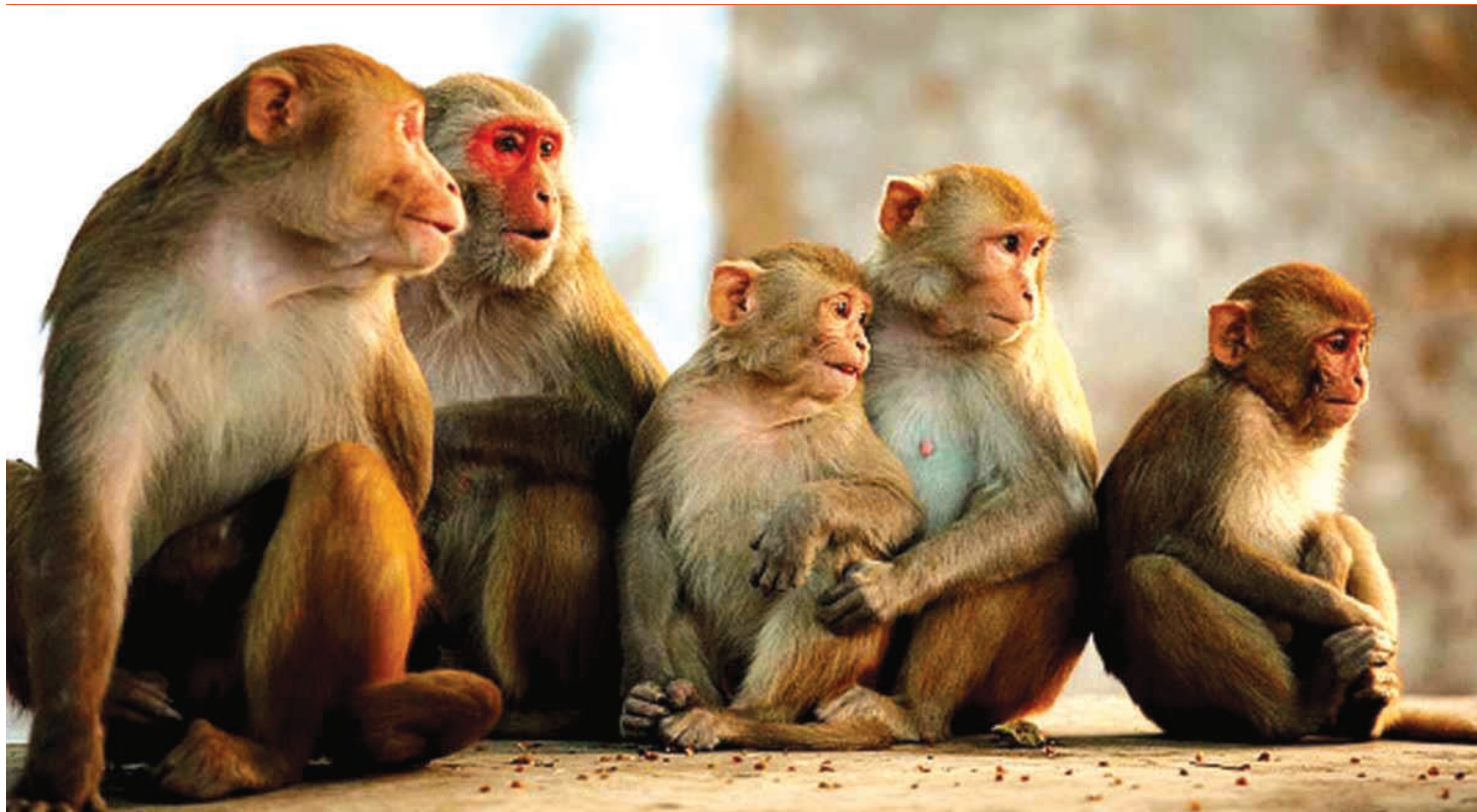

दमदार होते हैं भारतीय बंदर

भारतीय बंदर जंगलों के साथ-साथ शहरी इलाकों में घूमने वाले सबसे मशहूर बंदरों में से एक है। वे प्रकृति में रम जाने वाले प्राणी हैं और बेहद चतुर होते हैं। आवास विखंडन के कारण वे अब उत्तरी भारत के कई शहरी इलाकों में बस गए हैं। यहां वे मनुष्यों के साथ रहते हैं। यह मानव-पशु संघर्ष सभी के लिए चिंता के साथ-साथ मनोरंजन का विषय भी बनता जा रहा है। कई फोटोग्राफर और पर्यटक बंदर की इस प्रजाति का अध्ययन करने के लिए इन शहरों में जाते हैं और कई टेलीविज़न वृत्तचित्र और शो भी बनाए गये हैं। इस जानवर को हिंदुओं द्वारा पवित्र माना जाता है और इसका नाम हिंदू-देवता हनुमान के नाम पर रखा गया है।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

भारतीय बंदर की प्रजातियां
नेपाल ग्रे लंगूर (सेमनोपिथेकस शिस्टेसियस)
कश्मीर ग्रे लंगूर (सेमनोपिथेकस अजाक्स)
तराई ग्रे लंगूर (सेम्नोपिथेकस हेक्टर)
उत्तरी मैदान ग्रे लंगूर (सेमनोपिथेकस एंटेलस)
काले पैरों वाला ग्रे लंगूर (सेम्नोपिथेकस हाइपोल्यूकोस)
दक्षिणी मैदानी ग्रे लंगूर (सेम्नोपिथेकस डुसुमिएरी)
गुच्छेदार ग्रे लंगूर (सेमनोपिथेकस प्रियम)

शारीरिक विशेषताएँ : नर हनुमान भारतीय बंदर का वजन लगभग 18 किलोग्राम होता है जबकि मादा का वजन लगभग 11 किलोग्राम होता है। नर की कुल लंबाई लगभग 51 से 78 सेमी होती है जबकि मादा की लंबाई 40 से 68 सेमी होती है। पूंछ की लंबाई लगभग 69 सेमी से 101 सेमी होती है। उनके अंग बहुत मजबूत होते हैं और वे जमीन पर बहुत अच्छी तरह से दौड़ सकते हैं। वे बहुत फुर्तीले और अच्छे पर्वतारोही भी होते हैं। उनकी लांग टेल उन्हें चढ़ते और चलते समय सहारा और संतुलन देती है। फर आमतौर पर भूरे रंग का होता है, जबकि कुछ में काले चेहरे और कानों के साथ पीले रंग का फर होता है।

आहार: हनुमान लंगूर पत्ते, फल, फूल, कलियां, जामुन, फर्न, बांस

और लाइकेन खाते हैं। उनका पाचन तंत्र बहुत अच्छा और मजबूत होता है, जिससे वे विषाक्त पदार्थों को भी पचा सकते हैं। वे बहुत तेजी से खाते हैं और उनके पेट में मौजूद बैक्टीरिया उनके भोजन में मौजूद विषाक्त पदार्थों को तोड़ देते हैं। वे अपने भोजन का बड़ा हिस्सा जमीन पर फेंक कर बर्बाद कर देते हैं जिसे नीचे चर रहे हिरण खा जाते हैं। इसे एक सहजीवी संबंध भी माना जाता है। वे मकड़ियों, दीमकों, कीटों के लार्वा को खाकर और नमक चाटकर अपने खनिज और पोषक तत्वों की पूर्ति करते हैं। वे आम तौर पर सुबह और देर दोपहर में खाते हैं, जबकि वे दिन के गर्म हिस्सों में आराम करते हैं।

निवास स्थान : भारतीय बंदर भारत के बड़े हिस्से में पाए जाते हैं, जिनमें उष्णकटिबंधीय क्षेत्र, शुष्क झाड़ीदार क्षेत्र, शंकुधारी वृक्ष, पर्णपाती वृक्ष, अल्पाइन वन से लेकर भारतीय उपमहाद्वीप के शहरी क्षेत्रों के कंक्रीट के जंगल शामिल हैं। वे विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी तरह से रह सकते हैं। वे जोधपुर जैसे शहरों में बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

व्यवहार: वे बड़े समूहों में पाए जाते हैं, जिनमें आम तौर पर नर लंगूर का वर्चस्व होता है। एक समूह के सदस्यों की संख्या आम तौर पर 11 से 60 के बीच होती है। एक समूह का नेता केवल 18 महीने तक रहता है। समूह के नेता का फैसला करने के लिए एक कड़ी प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। वे अविवाहित समूह भी बना सकते हैं। बंदरों के झुंड का निवास क्षेत्र लगभग 1.3 वर्ग किलोमीटर से 13 वर्ग किलोमीटर तक है। दिन के अंत में सोने के लिए उनके पास एक पसंदीदा आराम करने वाला पेड़ भी है।

खतरा: भारत में कुछ क्षेत्रों में भारतीय हनुमान बंदर की आबादी बहुत स्थिर है जबकि कुछ क्षेत्रों में यह बहुत अनिश्चित है। हिंदू धर्म में इन्हें पवित्र माना जाता है और इन्हें मारना ईशनिंदा माना जाता है। हालांकि, कुछ धार्मिक लोग इन्हें भोजन और औषधि के रूप में ग्रहण करते हैं, जबकि कुछ इनके अंगों को सौभाग्य के ताबीज के रूप में रखते हैं। कई खतरे हैं जिनकी वजह से बंदर की इस प्रजाति की आबादी में गिरावट आई है। इनमें गहन कृषि, प्राकृतवास नुकसान, मानव-पशु संघर्ष, जंगल की आग, शिकार या संग्रहण और दुर्घटना प्रमुख हैं।

संरक्षण: इस प्रजाति को भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची II, भाग I के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है। हनुमान लंगूर को मारना कानून द्वारा निषिद्ध है, लेकिन इस कानून का सख्ती से पालन एक बड़ी समस्या है। उन्हें निम्नलिखित संरक्षित क्षेत्रों में रखा जाता है:

- अचानकमार अभ्यारण्य
- भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान
- चंडका-दंपारा अभ्यारण्य
- गोमर्डा अभ्यारण्य
- पलामू अभ्यारण्य
- वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान
- वाल्मीकि अभ्यारण्य
- कुंभलगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य ■

भारत में बंदरों के बारे में जागरूकता बेहद कम

(14 दिसंबर को विश्व बंदर दिवस पर विशेष)

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

हालांकि इन्टरनेशनल मंकी डे यानी विश्व बंदर दिवस दुनिया भर में मनाया जाता है किन्तु भारत में इसके बारे में आम जनों को अधिक जानकारी नहीं है। 14 दिसंबर को मंकी दिवस के रूप में दुनिया में कई चिड़ियाघरों में वार्षिक बंदर दिवस मनाया जाता है। इसके तहत रंगारंग कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इतना ही नहीं, कुछ देशों में जागरूकता फैलाने के लिए बंदर दिवस पर कला प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाता है।

बंदरों को समर्पित दिन

14 दिसंबर को हर साल इंटरनेशनल मंकी डे मनाने का मुख्य प्रयोजन इस दिन को बंदरों के लिये समर्पित करना है। यूं तो साल के 365 दिनों में से एक दिन अलग निकाल कर उसे बंदरों के हित के लिये निर्धारित किया गया है और उसका नाम इन्टरनेशनल मंकी डे रखा गया है किन्तु इस दिवस को यूएन (यूनाइटेड नेशन) द्वारा आधिकारिक तौर पर अभी तक घोषित नहीं किया गया है। इसके बाद भी दुनिया के बहुत से देशों में ये बंदर दिवस को मनाया जाता है।

गैर-मानव प्राइमेट्स के लिए है ये दिन

14 दिसंबर को बंदरों की कई उन प्रजातियों के बारे में भी जानकारी दी जाती है जो आजकल संकटग्रस्त हैं। इंद्री, रोलोवे बंदर, पश्चिमी चिंपांजी और इक्वाडोरियन व्हाइट-फ्रंटेड कैपुचिन आदि कुछ इस तरह की बंदरों की लुप्तप्राय प्रजातियां हैं।

ढाई सौ से अधिक प्रजातियां

बंदरों की कुल दो सौ साठ प्रजातियां दुनिया भर में फैली हुई हैं। ये प्रजातियां मुख्य अफ्रीका, मध्य अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और एशिया में पाई जाती हैं। इन प्रजातियों के बंदरों का आपस में मुख्य अंतर आकार, वजन और उपस्थिति को लेकर है। हर देश में जहां भी बंदर पाए जाते हैं, स्वाभाविक रूप से पर्यावरण कार्यकर्ता और पशु अधिकार गतिविधियां इंटरनेशनल मंकी डे को लेकर भावुक और मुखर होते हैं।

सॉरो और एरिक ने की शुरुआत

केसी सॉरो और एरिक मिलीकिन वो दो नाम हैं, जिनको मंकी डे की शुरुआत करने का सारा श्रेय जाता है। इस जोड़े ने ही लोगों के मन में जानवरों के प्रति प्यार जगाने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय बंदर दिवस की शुरुआत की। सॉरो और एरिक दुनिया के लोगों को इस इस प्रजाति के प्रति जागरूक करना चाहते थे। इस लक्ष्य को लेकर उन्होंने वर्ष 2000 में अंतर्राष्ट्रीय बंदर दिवस मना कर इस सिलसिले की शुरुआत की थी। ■

मकाक
शेर जैसी पूंछ वाला बन्दर

शेर की पूंछ वाला बन्दर या लायन-टेल्ड मकाक को वैज्ञानिक रूप से मैकाका सिलेनस नाम दिया गया है। इसे वांडरलू या ओल्ड वर्ल्ड मंकी के नाम से भी जाना जाता है। मकाक कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्यों में पश्चिमी घाट के लिए स्थानिक है। वर्षावनों के निवासी, पुरानी दुनिया के बंदर को अक्सर उष्णकटिबंधीय नम सदाबहार या मानसूनी जंगलों की ऊंची छतरियों में देखा जाता है। मकाक केवल दिन भर की गतिविधियों में संलग्न रहता है। ये सर्वाहारी होते हैं लेकिन उनके मुख्य आहार में स्थानीय फल, बीज, फूल, कीड़े, घोंघे और छोटे कशेरुक होते हैं।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

मकाक एक प्रकार का बंदर है और स्तनधारियों के एक वर्ग से संबंधित है। लायन-टेल्ड मकाक की प्रजाति दुनिया की सबसे छोटी मकाक प्रजातियों में से एक है। लायन-टेल्ड मकाक अपने पर्वतीय वर्षावन घर में पाई जाने वाली अविश्वसनीय किस्म का जीवंत उदाहरण है। अपने शर्मीले और एकाकी स्वभाव के कारण, यह प्रजाति अपने विशिष्ट क्षेत्र के अंदर रहने की प्रवृत्ति रखती है और केवल अपने वर्षावन आवास के भीतर ही घूमती है। शेर की पूंछ वाले मकाक का सबसे बड़ा समूह दक्षिण भारत में केरल के साइलेंट वैली नेशनल पार्क में पाया जा सकता है।

यह सेव साइलेंट वैली परियोजना का एक घटक था, जिसे 1973 में शुरू किया गया था और इसका उद्देश्य विकास परियोजनाओं से क्षेत्र की रक्षा करना था ताकि वहां की आखिरी शेर-पूंछ वाली मकाक आबादी को संरक्षित किया जा सके।

मकाक एक नजर में

मकाक का वैज्ञानिक नाम	मकाका सिलेनस
वज़न	3-10 किग्रा
प्राकृतिक वास	पश्चिमी घाट के वर्षावन (कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु)
आईयूसीएन स्थिति	लुप्तप्राय (Endangered)
साइट्स	परिशिष्ट 1 (Appendix-1)
जीवनकाल	20-38 वर्ष
भोजन	सर्वाहारी
लंबाई	40-61 सेमी
जनगणना	4,000 से नीचे

लक्षण

मकाक का नाम इसकी लंबी पूंछ से लिया गया है, जिसके अंत में शेर की तरह एक लटकन होता है।

उनके पास काले फर हैं और उनके पास एक शानदार ग्रे या चांदी की चोटी है जो उनके काले फर के अलावा उनके चेहरे को घेरती है। उनके चेहरे के चारों ओर एक धूसर अयाल होता है जिसके कारण उन्हें दाढ़ी वाले बंदर भी कहा जाता है। एक वर्ष से कम उम्र के शिशुओं में गुलाबी होने के कारण चेहरा ही बाल रहित और काला होता है। उनकी पूंछ का आकार लगभग 25 सेमी लंबा होता है। उनके पास गहरे गाल के पाउच भी होते हैं जो भोजन के भंडारण के लिए उपयोगी होते हैं।

कैद में 30 साल की तुलना में जंगलों में जीवन काल 20 वर्ष है। इस प्रजाति के नर ध्वनियों के साथ अपने घर की सीमाओं से संवाद करते हैं, जो इसकी विशिष्ट विशेषताओं में से एक है।

पर्यावास

मकाक भारत में सूखे जंगलों और उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में पाया जाता है। यह कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के पश्चिमी घाटों के लिए स्थानिक हैं। वे अपना अधिकांश समय घने और गीले जंगलों के पेड़ों में बिताते हैं।

स्थिति

लायन टेल्ड मैकाक को आईयूसीएन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर) द्वारा लुप्तप्राय के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

संरक्षण और जनसंख्या

वर्षावन में इस प्रजाति के आवास का विनाश इसकी समग्र आबादी के लिए सबसे बड़ा खतरा है। लकड़ी, कृषि और विकास के लिए व्यापक वनों की कटाई के परिणामस्वरूप, इन बंदरों ने वास्तव में अपने मूल क्षेत्र का 99% तक खो दिया है। शेर की पूंछ वाले बंदर की अलग-अलग आबादी आपस में प्रजनन नहीं कर सकती है। नतीजतन, ये बिखरी हुई आबादी वर्तमान में गंभीर गिरावट में है। इसके अतिरिक्त, नीलगिरि लंगूर, जिनका नियमित रूप से उनके मांस के लिए शिकार किया जाता है, जिन्हें गलत तरीके से औषधीय गुणों वाला माना जाता है, को कभी-कभी शेर-पूंछ वाले मकाक के लिए गलत माना जाता है, जिसके परिणामस्वरूप कई मौतें होती हैं। अन्य महत्वपूर्ण खतरों में फसल की छापेमारी के कारण कीट प्रजाति के रूप में माना जाना शामिल है।

जनसंख्या

आईयूसीएन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर) रेड लिस्ट का अनुमान है कि 4,000 से कम शेर-पूंछ वाले मकाक अस्तित्व में हैं, जिनमें 2,500 से कम परिपक्व हैं। माना जाता है कि 1,216 वयस्क मकाक केरल के जंगलों में रहते हैं और 500 तमिलनाडु में अन्नामलाई पहाड़ियों में पाए जाते हैं।

खतरा क्यों

चाय और कॉफी के लिए कृषि और औद्योगिक खेती के विस्तार ने उनकी जनसंख्या सीमा को गंभीर रूप से कम कर दिया है। नए बांधों और सिंचाई प्रणालियों का विकास भी उनकी कमी में योगदान देता है। यद्यपि संरक्षण के उपाय किए गए हैं, फिर भी निवास स्थान का नुकसान उनकी जनसंख्या में कमी का मुख्य कारण बना हुआ है।

यहां पाये जाते हैं

मकाक दक्षिण भारत के पश्चिमी घाटों के लिए स्थानिक है। दक्षिण भारत में कुछ बेहतरीन वन्यजीव अभयारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों में अन्नामलाई हिल्स, वालपराई हिल स्टेशन, अगस्त्यमाला बायोस्फीयर रिजर्व, और शेंदुरनी वन्यजीव अभ्यारण्य, शेट्टीहल्ली वन्यजीव अभ्यारण्य और पश्चिमी घाट में नीलगिरी बायोस्फीयर रिजर्व शामिल हैं। शेर-पूंछ वाले मकाक की आबादी वाले पश्चिमी घाट में वन्यजीव अभयारण्यों की सूची निम्नलिखित हैः

वन्यजीव अभ्यारण्य	राज्य	प्रजातियाँ
नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व	तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल।	नीलगिरि तहर, शेर की पूंछ वाला मकाक, और कमजोर नीलगिरि लंगूर।
साइलेंट वैली नेशनल पार्क	केरल	दक्षिण भारत में शेर-पूंछ वाले मकाक, नीलगिरी लंगूर और नीलगिरि तहर।
परम्बिकुलम टाइगर रिजर्व	केरल	मकाक और नीलगिरि तहर।
पेरियार राष्ट्रीय उद्यान	केरल	सफेद बाघ, शेर की पूंछ वाला मकाक, नीलगिरि लंगूर, नीलगिरि तहर, भारतीय हाथी और भारतीय बाइसन।
पंपदुम शोला राष्ट्रीय उद्यान	केरल	शेर-पूंछ वाला मकाक, गौर, नीलगिरि लंगूर, नीलगिरी मार्टन, तेंदुए और भारतीय जंगली कुत्ता
शरवती घाटी वन्यजीव अभ्यारण्य	कर्नाटक	शेर की पूंछ वाला मकाक, ग्रेट इंडियन हॉर्नबिल और इंडियन लॉरी और लॉरिकेट्स।
ब्रह्मगिरी वन्यजीव अभ्यारण्य	कर्नाटक	मालाबार पिट वाइपर, लायन टेल्ड मकाक, गौर, नीलगिरि मार्टन और नीलगिरि लंगूर
शेट्टीहल्ली वन्यजीव अभ्यारण्य	कर्नाटक	शेर-पूंछ वाला मकाक और किंग कोबरा
कलक्कड़ मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व	तमिलनाडु	शेर-पूंछ वाला मकाक, नीलगिरि लंगूर
अनामलाई टाइगर रिजर्व	तमिलनाडु	बंगाल टाइगर, जंगली कुत्ता, नीलगिरि तहर और शेर की पूंछ वाला मकाक

मुक्ता गुप्ता की पेंटिंग्स में करुणा, सुकून, शांति, ठहराव और आनंद है

पेंटिंग मेरे लिए जुनून है। मैं पेंटिंग के बगैर जी नहीं सकती। जिस दिन पेंटिंग नहीं करती हूं, उस दिन लगता है कि जीवन में कुछ ठहर-सा गया है। पेंटिंग मेरी मजबूती है, पेंटिंग ही मेरी कमजोरी भी है। मैं तनाव से संबंधिथ विषयों पर पेंटिंग बनाने से दूर भागती हूं। मेरी पेंटिग्स में आपको सुकून मिलेगा। उनमें आपको हर्ष, आनंद, खुशियां ही मिलेंगी। मेरी पेंटिंग्स आपको राहत देंगी। सभी पेंटिग्स कूल मूड में हैं। मेरी पेंटिग्स में आपको मां की ममता दिखेगी, पति का प्यार दिखेगा, पिता का दुलार दिखेगा।

मैंने ग्रेजुएशन किया। ग्रेजुएशन करने के बाद मैंने जमशेदपुर के रवींद्र भवन से फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा किया। फिर चंडीगढ़ गई। वहां से मास्टर इन फाइन आर्ट्स की डिग्री ली। पुनेंदु महतो सर वर्धा में थे। उन्होंने मेरी कमजोरी को पकड़ा और दूर किया। मैं दरअसल डरती थी। मेरे भीतर आत्मविश्वास की कमी थी। मुझे लगता था कि यह काम मुझसे होगा या नहीं। उन्होंने इतना जबरदस्त तरीके से मुझे सपोर्ट किया कि मेरे भीतर कांफिडेंस आ गया। मैं जो कुछ भी आज हूं, उसमें पुनेंदु महतो सर का बड़ा योगदान है।

मैं बचपन से ही पेंटिंग्स में हाथ आजमा रही थी। घर में किसी ने सपोर्ट नहीं किया। पापा ने भी नहीं। वह तो डांटते थे। फटकारते थे। कहते थे कि कुछ पढ़ ले तो काम की हो जाएगी। क्या पेंटिग्स के चक्कर में पड़ी रहती हो। मैं पेंटिंग को पूजा मानती थी। पापा मुझे चित्र बनाते देख नाराज होते थे। इसके बावजूद मैंने अपनी प्रैक्टिस छोड़ी नहीं। कॉपी के आखिरी पन्ने पर मैं अपने प्रयास में लगी रहती थी। मैंने पेंटिग्स को ही पूजा मान लिया था। मेरी दीवानगी इसके प्रति बढ़ती जा रही थी।

कई बार ऐसा भी हुआ, जब मेरे पास कलर नहीं थे। पापा से पैसे मांग नहीं सकती थी क्योंकि वो मेरी पेंटिंग्स के शौक के खिलाफ थे। तो, कई बार मैंने किसी की साड़ी में पेंटिंग कर दी, कई बार किसी की ड्रेस पर पेंटिंग कर दी और उन लोगों ने मुझे 20 रुपये, कभी 40 रुपये तक दिये। मैंने इस प्रकार कलर्स का खर्चा निकालना शुरु किया और पेंटिग्स में जी-जान से जुट गई।

• कला जगत •

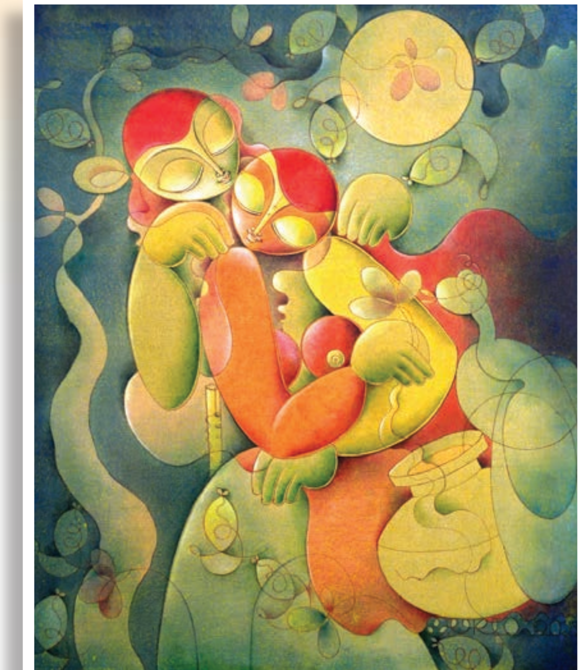

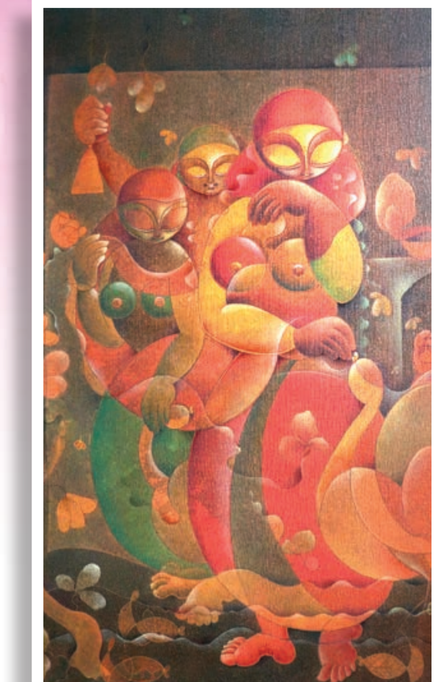

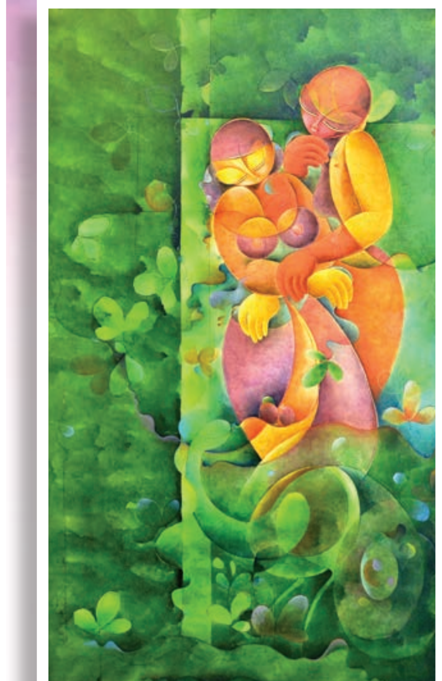

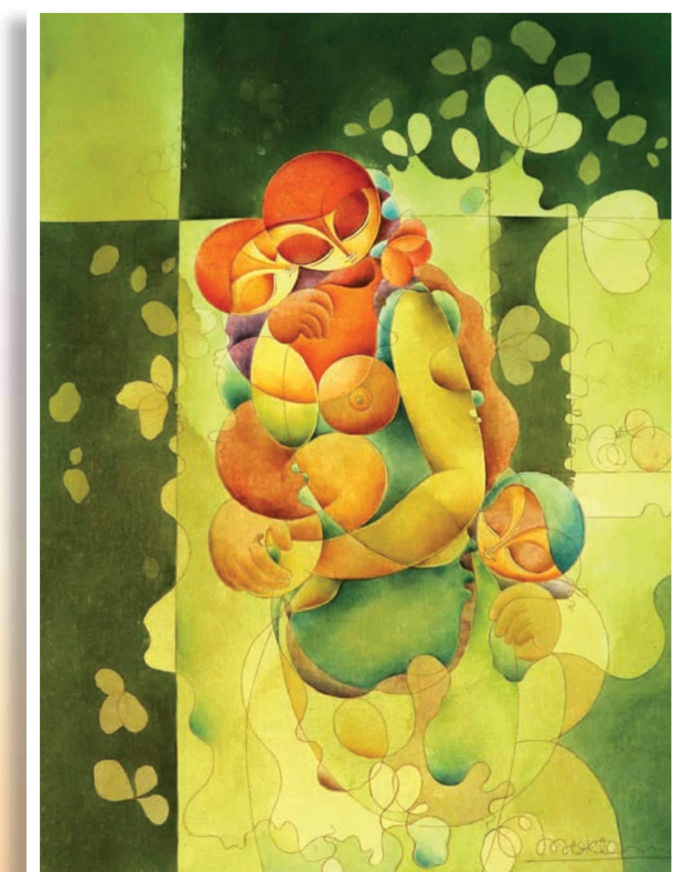

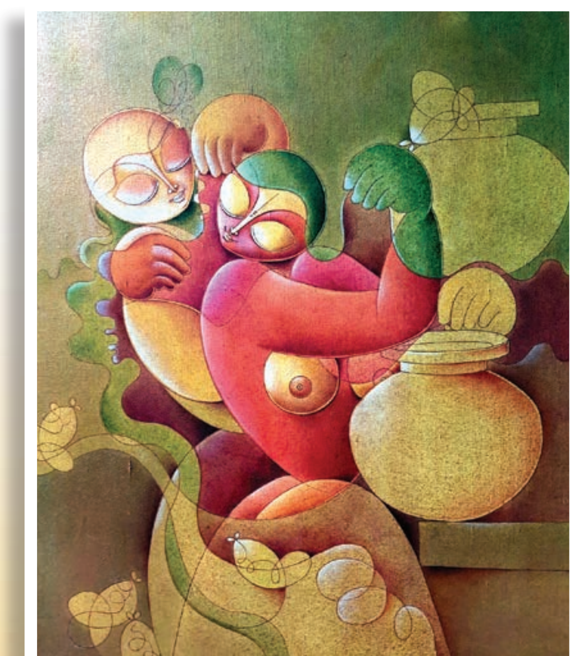

मेरी पेंटिग्स 100 रुपये से लकर 7 लाख रुपये तक में बिकी है। मुझे कोई घमंड नहीं। मैंने मेहनत की और उसका फल मुझे मिला। मैं अपने परफार्मेंस से बेहद खुश हूं। संतुष्ट हूं। मुझे बहुत पैसे नहीं चाहिए। उतने ही चाहिए, जितने में जीवन चल सके। मुझे शांति चाहिए। मैं सदैव शांति की तलाश में रहती हूं और वह मुझे मिलती है पेंटिग्स में।

मेरे काम को देश भर में लोगों ने स्वीकार किया। मुझे कई ईनाम मिले। विदेशों में गई तो वहां भी सम्मान मिला। बहुत सारी एक्जीबिशन्स मैंने की। दर्जनों की संख्या में। मैं शॉर्टकर्ट में भरोसा नहीं करती। मेरी प्रैक्टिस आज भी जारी है। ■

(जैसा मुक्ता गुप्ता ने **आनंद सिंह** को बताया)

गौर से पढ़िए युगांतर प्रकृति

हमारे 20 सवालों के जवाब दीजिए और, पाइए आकर्षक पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार-501 रुपये नकद

द्वितीय पुरस्कार-351 रुपये नकद

तृतीय पुरस्कार-251 रुपये नकद

नियम और शर्तें

1. आपको युगांतर प्रकृति का यह अंक बेहद गौर से पढ़ना है।
2. इसी अंक में प्रकाशित विभिन्न लेखों से हम 20 सवाल करेंगे। उन 20 सवालों के जो सही-सही जवाब देंगे, उन्हें नकद पुरस्कार दिया जाएगा।
3. अगर 20 में से 20 सवालों के सही जवाब कई लोग देते हैं तो पुरस्कार उन्हें मिलेगा, जिनका जवाब सबसे पहले आएगा। यानी, जो पहले जवाब देंगे, वो पुरस्कार के हकदार होंगे।
4. जवाब सिर्फ ई-मेल के माध्यम से ही स्वीकार किये जाएंगे। ई-मेल आईडी है yugantarprakriti@gmail.com
5. कृपया अपनी प्रविष्टि के साथ अपना नाम, घर का पूरा पता, मोबाइल नंबर, एक रंगीन फोटो, बैंक खाता अथवा यूपीआई आईडी अथवा क्यूआर कोड अवश्य भेजें।
6. विजेताओं को धनराशि सीधे उनके खाते में भेजी जाएगी और अगले अंक में उनकी तस्वीर के साथ उनके नाम की घोषणा की जाएगी।
7. इस प्रतियोगिता में कोई भी हिस्सा ले सकता है। उम्र, लिंग का कोई बंधन नहीं है।
8. इस प्रतियोगिता में युगांतर प्रकृति परिवार के सदस्य हिस्सा नहीं ले सकते।
9. निर्णायक का फैसला अंतिम और बाध्यकारी होगा। उसे किसी भी सूरत में, कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकती है।

पढ़ो और पुरस्कार पाओ (4)

1. मुक्ता गुप्ता किस टोन में पेंटिंग बनाती हैं?
2. किनकी पेंटिंग्स में आपको सिर्फ खुशियां दिखती हैं?
3. कलर के लिए 20 रुपये कमाने के लिए कौन और क्या करता था?
4. दुनिया का सबसे खतरनाक बंदर कहां पाया जाता है?
5. भारत में बंदरों की कितनी प्रजातियां पाई जाती हैं?
6. सबसे खूबसूरत शार्क का क्या नाम है?
7. वह कौन सा बंदर है, जिसकी पूछ शेर जैसी होती है?
8. दुनिया भर में मकाक बंदरों की संख्या अब कितनी रह गई है?
9. एक मकाक बंदर औसतन कितने साल जीता है?
10. मकाक को भोजन में क्या पसंद है?
11. झारखंड के रांची में मछली पालन की कौन सी विधा सिखाई-समझाई जाती है?
12. भारत में बंदरों के बारे में जागरूकता का स्तर कैसा है?
13. प्राजेश जेना कौन हैं और क्या करते हैं?
14. भारतीय गौर और बाइसन में क्या फर्क है?
15. बास्किंग शार्क कहां पाई जाती है?
16. दुनिया की सबसे खूबसूरत शार्क क्या खाना पसंद करती है?
17. भारत में मोटे तौर पर मछलियों की कितनी प्रजातियां पाई जाती हैं?
18. जमशेदपुर में किस तारीख को बाल मेला का आयोजन हुआ?
19. बाल मेला में कितने स्कूल के बच्चों ने हिस्सा लिया?
20. जगुआर किस देश में सबसे ज्यादा पाया जाता है?

Trustworthy Testing Solutions for a Healthier Environment

- Ambient Air Quality monitoring
- Work Zone Ambient Air Quality
- Emission sources Monitoring & Analysis
- (Stack Emission & DG set emission)
- Noise Level monitoring (Ambient Noise & Work Zone Noise)
- Ground water sampling & analysis
- Drinking water sampling & analysis
- Surface water sampling & analysis
- Waste water sampling & analysis
- Soil sampling & analysis

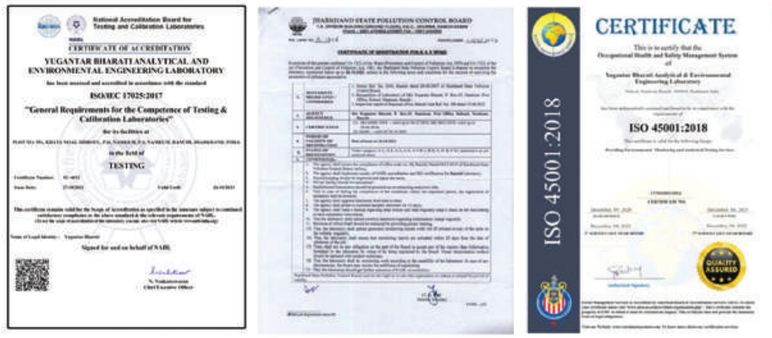

Reaching Out for a Brighter Tomorrow

Yugantar Bharati

Analytical & Environmental Enngineering Laboratory

Accredited by : NABL and JSPCB   Certified by : 9001:2015 & 18001:2007

Phone : 9304955301/2/3/4/5 Email: ybaeel@gmail.com

Namkum Post Office, Sidroul, Namkum, Ranchi-834010, Jharakhand, India

SkillSonics®

सी. एल. बी. मेगा स्किल सेंटर

(झारखण्ड सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्किल सेंटर)

100% रोजगार अवसर

चन्दुलाल भालोटिया वेलफेयर ट्रस्ट की एक इकाई

उपलब्ध कोर्स

- मेटल और ऑर्क वेल्डिंग(MMAW)
- सहायक इलेक्ट्रीशियन
- सी एन सी ऑपरेटर
- फिटर (मैकेनिकल और फेब्रीकेशन)

योग्यता

- आयु:
  न्युनतम 18 वर्ष
- योग्यता:
  न्यूनतम 8वीं पास
- झारखण्ड का आवासीय प्रमाण पत्र

पाठ्यक्रम की अवधि : 3 से 4 महीना

नि: शुल्क सुविधाएं

- प्रशिक्षण फीस
- कम्प्यूटर प्रशिक्षण
- ड्रेस और किताबें
- अंग्रेजी वार्तालाप अध्ययन
- खाना और रहना

प्लेसमेंट पार्टनर

Ramkrishna Forgings Limited | TATA ELECTRONICS | HONDA | ME | MARUTI SUZUKI

पता: कान्ड्रा - सरायकेला रोड, भोलाडीह, मेटलसा कंपनी के सामाने, सरायकेला, झारखण्ड-833220

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: **6287798604, 6287798605, 6287798602**

email: skillclb@gmail.com, centrehead.clb@gmail.com | Website: https://clbskills.org